PRGI-CTHIN/26/A2900

मासिक पत्रिका

दर्शन बालोद

पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

✦ वर्ष-01 ✦ अंक-01 ✦ मई-2026 ✦ बालोद से प्रकाशित ✦ पृष्ठ-36 ✦ मूल्य-100 रुपये

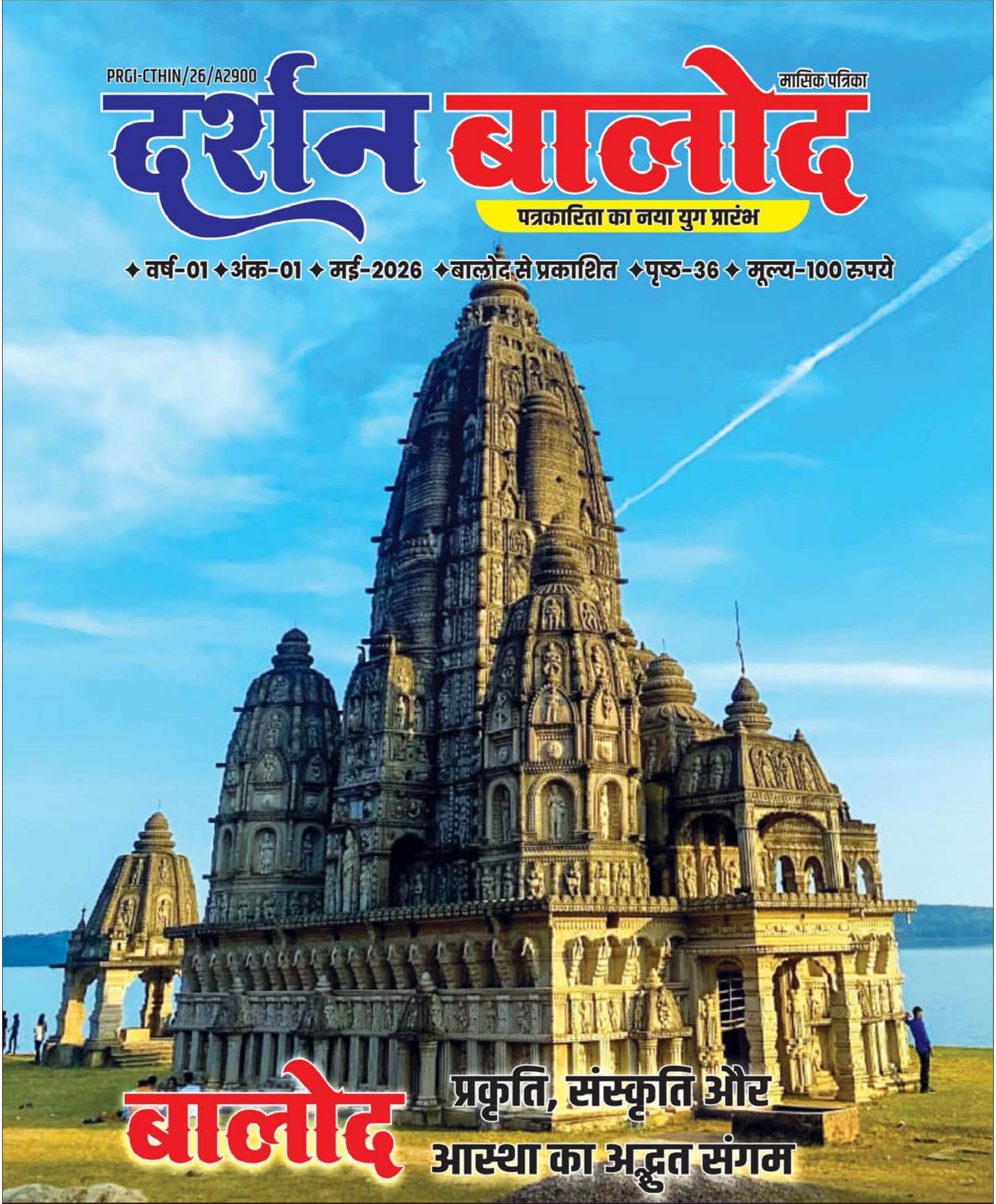

बालोद

प्रकृति, संस्कृति और आस्था का अद्भुत संगम

समाचार · सामाजिक सरोकार · शिक्षा · स्वास्थ्य · कृषि · संस्कृति · युवा

हमारा संकल्प – सत्य, निष्पक्ष और जनहित में पत्रकारिता

बालोद जिले के सुप्रसिद्ध
श्री त्र्यंबकेश्वर धाम
ओनाकोना में आपका
स्वागत, वंदन और
हार्दिक अभिनंदन है....

ॐ देव श्री पुरवा राम फूटान - देवी श्रीमती
प्रेमवती फूटान (मंदिर निर्माणकर्ता)

माधुरी दीपक यादव जी को दर्शन बालोद न्यूज़ के प्रथम अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। टीम का यह प्रयास सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। आपका प्रकाशन निरंतर प्रगति करे....

तीरथ राज फूटान (गड्डी भैया)
मंदिर संस्थापक

सेवक

सूरज फूटान (धमतरी)
मंदिर व्यवस्थापक

स्व. श्रद्धेय श्री एल.पी. यादव जी
सेवानिर्वत्त प्राचार्य

स्व.श्रद्धेय श्री कमोद यादव जी
सेवानिर्वत्त शिक्षक

स्व .श्रद्धेय श्री लोकेंद्र यादव जी
शिक्षक एवं भूतपूर्व विधायक

श्रीमती दुर्गेशनंदिनी यादव
प्राचार्य दुधली

श्रीमती विनोदनी यादव
प्राचार्य कन्नेवाड़ा

दर्शन बालोद न्यूज़ के प्रथम अंक के प्रकाशन एवं शुभारंभ पर हार्दिक शुभकामनाएं।
संपादक माधुरी दीपक यादव एवं पूरी टीम को उज्ज्वल भविष्य की बधाई।
आपका प्रयास पत्रकारिता को नई दिशा दे।

श्रीमती कादंबिनी यादव व्याख्याता बड़गांव

आप सभी को पर्यावरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दर्शन बालोद के प्रथम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं.
टीम का यह प्रयास क्षेत्रीय पत्रकारिता को मजबूती देगा।
निरंतर सफलता की मंगलकामनाएं

बालोद जिले के हर ग्राम को प्लास्टिक मुक्त बनाने में आप भी अपना योगदान दें,स्टील का थाली- गिलास अपनाइए , धरती को प्रदूषण से बचाइए, जय हिन्द, जय छतीसगढ़, जय माता दी..

राजेश कुमार सिन्हा
समाजसेवी ग्राम सिर्राभाँठा,
गुंडरदेही, जिला बालोद

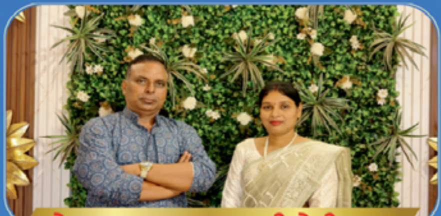
बेनूराम साहू , भारती देवी साहू

दर्शन बालोद के प्रथम अंक के प्रकाशन
पर हार्दिक बधाई,
संपादक माधुरी दीपक यादव जी के नेतृत्व
में नई शुरुआत प्रेरणादायक है। टीम को
उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं....

जयंत साहू , हर्षिता साहू

“मानव सेवा ही माधव सेवा है”

मूलतः बालोद जिले के ग्राम नर्रा निवासी वर्तमान में पदुमनगर भिलाई 03 में निवासरत समाजसेवी एवं सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर बेनूराम साहू और उनके परिवार द्वारा किए जा रहे विभिन्न सेवा कार्यों की झलकियां

कर्मा प्याऊ
कर्मा प्याऊ

स्व. श्री मंगतू राम साहू
ग्राम नर्रा वाले की स्मृति में

ठंडा पानी

सौजन्य - बेनू राम साहू (रेलवे)
घोठिया चौक झलमला, जिला - बालोद

दानदाताओं द्वारा संचालित

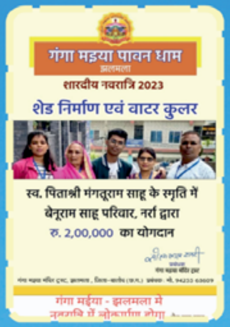
गंगा मइया पावन धाम
झलमला

शारदीय नवरात्रि 2023

शेड निर्माण एवं वाटर कुलर

स्व. पिताश्री मंगतूराम साहू के स्मृति में
बेनूराम साहू परिवार, नर्रा द्वारा
रु. 2,00,000 का योगदान

गंगा मईया - झलमला मे

दर्शन बालोद मासिक पत्रिका पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

स्वामी एवं प्रकाशक : माधुरी यादव

संपादक

माधुरी यादव

सलाहकार संपादक

दीपक यादव
तीरथ राज फूटान

विधिक सलाहकार

अधिवक्ता नीतू सोनवानी

ब्यूरो/ संवाददाता

बालोद	संतोष कुमार साहू,अरुण साहू, चित्ररेखा साहू
जुंगेरा	लेखराम साहू
भरदाकला (अर्जुंदा)	क्रांति भूषण साहू
रेंगाडबरी (डौंडीलोहारा)	नेमन साहू
खेरथाबाजार (देवरी बंगला)	यशस्वी कटझरे
गुंडरदेही	प्रेम प्रकाश साहू
घोटिया (डौंडी)	शशिकांत निषाद
करहीभदर	दीपक मसीह
निपानी	ईश्वर लाल गजेंद्र
सिकोसा (हल्दी)	रूपचंद जैन
लाटाबोड़	कुलेश्वर प्रसाद आसनिक
गुरुर ब्लॉक	सूर्यकांत साहू,वीरेंद्र साहू
पुरूर (फागुनदाह)	अनिल साहू
डूंडेरा (अर्जुंदा)	छबि लाल कोर्राम
घीना (सुरेगांव)	रूपसिंह रावटे
डंगनिया (अंडा)	संजय कुमार साहू
दल्लीराजहरा	गूंजा डेविड

स्वामी एवं प्रकाशक माधुरी यादव एवं मुद्रक संदीप तिवारी राज द्वारा छत्तीसगढ़ प्रिंटर्स एन्ड पब्लिशर्स, अनंत विहार कॉलोनी दलदल सिवनी मार्ग मोवा- रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492014 से मुद्रित कर वार्ड क्रमांक-13 जगन्नाथपुर, सांकरा आबादीपारा-बालोद, छत्तीसगढ़ -491226. जिला - बालोद (छ.ग.) से प्रकाशित।

संपादक- माधुरी यादव
*पी.आर.बी.एक्ट के तहत समस्त समाचार/लेखों के चयन के लिए जिम्मेदार
मोबाइल- 9755235270, 7067077434
Email ID darshanbalodnews@gmail.com
***(सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र बालोद होगा)**

वर्ष-01 | अंक- 01 | मई-2026

PRGI-CTHIN/26/A2900

4
एक शख्सियत, कहानी सफलता से पहले संघर्ष की – पद्मश्री शमशाद बेगम

8
छत्तीसगढ़ का 'मिनी त्र्यंबकेश्वर' बना आस्था और पर्यटन का नया केंद्र

बीड़ी कारोबारी से बने 'ग्रीन वॉरियर': गुरुर के जयंत किरी ने बदली पर्यावरण संरक्षण की तस्वीर

14. एकता, अधिकार और सामाजिक बदलाव का संदेश...
15. राजहरा की बेटी पूर्वा ने रचा सफलता का नया इतिहास...
16. "टीचर की एक बात ने बदल दी जिंदगी": दुबले-पतले छात्र ...
19. चरवाहे के बेटे खेरथाडीह के देव (आनंद) यादव कई गांवो के बच्चों ..
20. यादव समाज की तीन बेटियां बनी प्रेरणा की मिसाल : शिक्षा में दो ..
22. डुआ से जगन्नाथपुर बनने की रहस्यमयी कहानी: 11वीं शताब्दी का शिव ..
24. 26 बार रक्तदान, नेत्रदान और देहदान का संकल्प ...

विशेष सूचना : दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक को घर बैठे प्राप्त करने के लिए हमारी संस्था की सदस्यता जरूर ग्रहण करें। जिसके तहत आपको 1000 प्रति वर्ष अग्रिम शुल्क जमा करना होगा। जिसके एवज में हम आपको हर महीने का अंक आप तक घर पहुंचा कर देंगे और आपकी खबरें भी इसमें प्रमुखता से प्रकाशित की जाएगी। बालोद जिले के अन्य बड़े-बड़े क्षेत्र में भी संवाददाता नियुक्त किए जाने हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें 9755235270 (एमडी).

पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ करने की दिशा में "दर्शन बालोद न्यूज़" का संकल्प

आज के दौर में पत्रकारिता तेजी से बदल रही है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रभाव के कारण खबरों की होड़ ऐसी बन गई है, जहां अक्सर यह मान लिया जाता है कि जो सबसे पहले "ब्रेकिंग न्यूज़" डाल दे, वही सबसे बड़ा पत्रकार है। लेकिन क्या केवल घटनाओं की जानकारी सबसे पहले देना ही पत्रकारिता का वास्तविक उद्देश्य है? क्या पत्रकारिता सिर्फ दुर्घटनाओं, अपराधों और विवादों तक सीमित रह सकती है?

दर्शन बालोद न्यूज़ का मानना है कि पत्रकारिता इससे कहीं अधिक व्यापक, जिम्मेदार और समाज को दिशा देने वाला माध्यम है। किसी बड़ी घटना के होने पर खबर अपने आप बन जाती है, लेकिन समाज के भीतर छिपी सकारात्मक कहानियों, संघर्षों, उपलब्धियों, मूलभूत समस्याओं और बदलाव की संभावनाओं को सामने लाना ही वास्तविक पत्रकारिता की पहचान है।

इसी सोच और उद्देश्य के साथ "दर्शन बालोद न्यूज़" अपनी मासिक पत्रिका के माध्यम से बालोद जिले पर केंद्रित पत्रकारिता का एक नया युग प्रारंभ करने जा रहा है। यह सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि जिले की पहचान, संस्कृति, प्रतिभाओं, समस्याओं और संभावनाओं को सामने लाने का एक सामूहिक मंच होगा।

हम शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण, ग्रामीण विकास, महिलाओं की उपलब्धियों, युवाओं की प्रेरणादायक कहानियों, स्थानीय कला-संस्कृति, पर्यटन स्थलों, किसानों की समस्याओं, जनहित के मुद्दों और जिले की उन सकारात्मक तस्वीरों को प्रमुखता देंगे, जो अक्सर मुख्यधारा की खबरों में जगह नहीं बना पातीं।

दर्शन बालोद न्यूज़ का उद्देश्य केवल खबर प्रकाशित करना नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करना, लोगों की अच्छाइयों को सामने लाना और उन्हें दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत एवं रोल मॉडल के रूप में स्थापित करना है। हम सच दिखाने के जज्बे के साथ पत्रकारिता करेंगे, लेकिन साथ ही समाज को सकारात्मक दिशा देने की जिम्मेदारी भी निभाएंगे।

यह प्रयास नारी सशक्तिकरण की दिशा में भी एक मजबूत कदम है। एक महिला संपादक के नेतृत्व में पत्रकारिता का यह मंच यह साबित करेगा कि महिलाएं केवल जिम्मेदारी निभाने तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की सोच बदलने और पत्रकारिता जैसे प्रभावशाली क्षेत्र में नई दिशा देने की क्षमता भी रखती हैं।

बालोद जिले की जिन विशेषताओं से उसकी पहचान बनती है — चाहे वह ओना-कोना मंदिर हो, तांदुला नदी हो, सियादेही हो, गंगा मैया मंदिर हो, जिले की लोकसंस्कृति हो या यहां की प्रतिभाएं — उन सभी पर लगातार विशेष खबरें और विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की जाएंगी।

हमारा प्रयास रहेगा कि हर मासिक अंक पाठकों के लिए सिर्फ पढ़ने योग्य नहीं, बल्कि संग्रहणीय और प्रेरणादायक बने। आने वाले समय में पाठकों को बहुत कुछ नया, सकारात्मक और अलग देखने-पढ़ने को मिलेगा। दर्शन बालोद न्यूज़ केवल समाचार नहीं, बल्कि समाज का "दर्शन" कराने का एक प्रयास है।

माधुरी दीपक यादव
संपादक
दर्शन बालोद

बालोद में अनोखी पहल: “108 बार जय श्री राम लिखो, फ्री में बाल कटवाओ”, बच्चों को संस्कारों से जोड़ रहा रुद्र यूनिसेक्स सैलून

लिखने की आदत और मानसिक संतुलन बेहतर होता है, मोबाइल से दूरी, संस्कारों से नजदीकी

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

आज के दौर में जहां बच्चे मोबाइल और टीवी की दुनिया में अधिक समय बिता रहे हैं, वहीं यह पहल उन्हें स्क्रीन से दूर कर सकारात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित कर रही है। “जय श्री राम” लिखने की प्रक्रिया बच्चों में अनुशासन, श्रद्धा और संस्कारों का विकास करने का माध्यम बन रही है।

समाजसेवा से जुड़ा नाम

इस पहल के पीछे सक्रिय उमेश कुमार सेन केवल व्यवसायी ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े एक सक्रिय व्यक्तित्व भी हैं। वे पूर्व में बजरंग दल के जिला संयोजक रह चुके हैं और वर्तमान में विश्व हिंदू परिषद के जिला सह मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं। सामाजिक सरोकारों और जनसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इस पहल में साफ दिखाई देती है।

लोगों ने की सराहना

अभिभावकों और स्थानीय लोगों ने इस पहल की जमकर सराहना की है। उनका कहना है कि यह केवल मुफ्त सेवा नहीं, बल्कि बच्चों में अच्छे संस्कार और सांस्कृतिक चेतना विकसित करने का प्रयास है।

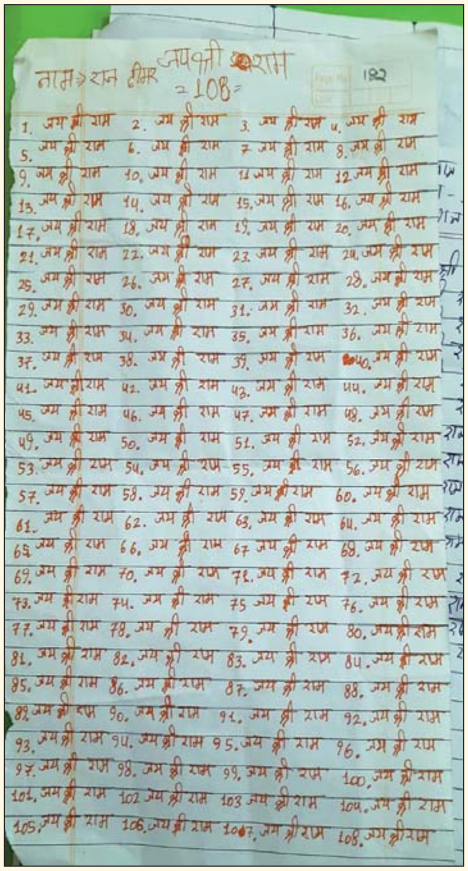

नाम ⇒ राम [illegible] जय श्री राम
=108=
182

1. जय श्री राम 2. जय श्री राम 3. जय श्री राम 4. जय श्री राम
5. जय श्री राम 6. जय श्री राम 7 जय श्री राम 8. जय श्री राम
9. जय श्री राम 10. जय श्री राम 11 जय श्री राम 12 जय श्री राम
13. जय श्री राम 14. जय श्री राम 15. जय श्री राम 16. जय श्री राम
17. जय श्री राम 18. जय श्री राम 19. जय श्री राम 20. जय श्री राम
21. जय श्री राम 22. जय श्री राम 23. जय श्री राम 24. जय श्री राम
25. जय श्री राम 26. जय श्री राम 27. जय श्री राम 28. जय श्री राम
29. जय श्री राम 30. जय श्री राम 31. जय श्री राम 32. जय श्री राम
33. जय श्री राम 34. जय श्री राम 35. जय श्री राम 36. जय श्री राम
37. जय श्री राम 38. जय श्री राम 39. जय श्री राम 40. जय श्री राम
41. जय श्री राम 42. जय श्री राम 43. जय श्री राम 44. जय श्री राम
45. जय श्री राम 46. जय श्री राम 47. जय श्री राम 48. जय श्री राम
49. जय श्री राम 50. जय श्री राम 51. जय श्री राम 52. जय श्री राम
53. जय श्री राम 54. जय श्री राम 55. जय श्री राम 56. जय श्री राम
57. जय श्री राम 58. जय श्री राम 59. जय श्री राम 60. जय श्री राम
61. जय श्री राम 62. जय श्री राम 63. जय श्री राम 64. जय श्री राम
65 जय श्री राम 66. जय श्री राम 67 जय श्री राम 68. जय श्री राम
69. जय श्री राम 70. जय श्री राम 71. जय श्री राम 72. जय श्री राम
73. जय श्री राम 74. जय श्री राम 75 जय श्री राम 76. जय श्री राम
77. जय श्री राम 78. जय श्री राम 79. जय श्री राम 80. जय श्री राम
81. जय श्री राम 82. जय श्री राम 83. जय श्री राम 84. जय श्री राम
85. जय श्री राम 86. जय श्री राम 87. जय श्री राम 88. जय श्री राम
89. जय श्री राम 90. जय श्री राम 91. जय श्री राम 92. जय श्री राम
93. जय श्री राम 94. जय श्री राम 95. जय श्री राम 96. जय श्री राम
97. जय श्री राम 98. जय श्री राम 99. जय श्री राम 100. जय श्री राम
101. जय श्री राम 102 जय श्री राम 103 जय श्री राम 104. जय श्री राम
105. जय श्री राम 106. जय श्री राम 107. जय श्री राम 108. जय श्री राम

छोटी पहल, बड़ा संदेश

बालोद की यह पहल यह संदेश दे रही है कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए बड़े संसाधनों की नहीं, बल्कि अच्छी सोच और सच्चे प्रयास की आवश्यकता होती है। अब यह सैलून केवल बाल काटने की जगह नहीं, बल्कि बच्चों को संस्कार, संस्कृति और सकारात्मकता से जोड़ने का एक माध्यम बन चुका है।

एक शख्सियत, कहानी सफलता से पहले संघर्ष की – पद्मश्री शमशाद बेगम

रूढ़िवादिता के दौर में घर से निकल रात 11 बजे तक शिक्षा की लौ जगाती रहीं, मां ने गहने बेचकर पढ़ाया था इसलिए खुद भी दूसरी महिलाओं को फ्री में पढ़ाकर बनाया साक्षर

पद्मश्री शमशाद बेगम जी , डीजीपी अरुण देव गौतम से भेंट करते हुए।

दर्शन बालोद न्यूज के लिए
दीपक यादव की खास रिपोर्ट

किसी भी व्यक्ति की सफलता केवल उसकी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके संघर्षों से भी पहचानी जाती है। हम अक्सर लोगों की सफलता देखते हैं, लेकिन उसके पीछे छिपे संघर्ष को जानने की कोशिश कम ही करते हैं। दर्शन बालोद न्यूज के इस विशेष अंक में हम आपको एक ऐसी शख्सियत के संघर्ष और सेवा से रूबरू करा रहे हैं, जिनकी कहानी आज हजारों महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी है। यह कहानी है बालोद जिले की प्रथम पद्मश्री सम्मानित सामाजिक कार्यकर्ता शमशाद बेगम की, जिन्हें आज पूरा छत्तीसगढ़ "महिला कमांडो" की प्रणेता के रूप में जानता है। आज उनके नाम और काम की चर्चा देशभर में हो रही है, लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के पीछे संघर्ष, सेवा, त्याग और समाज के लिए समर्पण की लंबी कहानी जुड़ी हुई है।

जब महिलाओं का घर से निकलना भी मुश्किल था

यह बात 1990 के दशक की है, जब गांवों में अशिक्षा और रूढ़िवादिता का बोलबाला था। महिलाओं का घर से बाहर निकलना भी आसान नहीं माना जाता था। सामाजिक बंधनों में जकड़ी महिलाएं शिक्षा से दूर थीं। ऐसे दौर में शमशाद बेगम महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण बनकर सामने आईं। उन्होंने निरक्षरता के खिलाफ लड़ाई शुरू की और महिलाओं को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। गरीबी में पली-बढ़ीं शमशाद बेगम बताती हैं कि उनकी मां श्रीमती आमना बेगम ने बच्चों की पढ़ाई के लिए अपने गहने तक बेच दिए थे। माता-पिता के शिक्षा के प्रति लगाव और समर्पण ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने अपनी प्रेरणा अपनी मां, नानी जोहरा बी और मदर टेरेसा से प्राप्त की।

रात 11 बजे तक गांव-गांव जाकर पढ़ाती थीं महिलाओं को

शमशाद बेगम ने अपने गुंडरदेही स्थित निवास में महिलाओं को निशुल्क पढ़ाने की शुरुआत की। उनका मानना था कि गरीबी की वजह से बेटियों की पढ़ाई कभी नहीं रुकनी चाहिए। वह बिना किसी वेतन या मानदेय के साक्षरता अभियान से जुड़ीं। रात 10 से 11 बजे तक गांव-गांव जाकर निरक्षरों को पढ़ाना, शिक्षकों को प्रशिक्षण देना और महिलाओं को जागरूक करना उनकी दिनचर्या बन गई थी। उनके इस समर्पण को देखते हुए जब उन्होंने सबसे पहले 100 निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाया, तब उन्हें ब्लॉक स्तर पर उपसंयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई। उनकी शादी वर्ष 1984 में हुई थी। वर्ष 1995 से उनके पति रफीक खान भी इस अभियान में उनके साथ जुड़ गए और दोनों ने मिलकर शिक्षा और महिला जागरूकता के लिए लगातार काम किया।

पद्मश्री शमशाद बेगम जी , आईजी अभिषेक शांडिल्य से भेंट करते हुए।

18 हजार निरक्षरों को बनाया साक्षर, महिला शिक्षा दर पहुंची 75 प्रतिशत

सन् 1990 से दुर्ग जिले में साक्षरता समिति द्वारा संचालित सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के तहत विकासखंड गुंडरदेही साक्षरता समिति में अतिरिक्त परियोजना संयोजक के रूप में उन्होंने गांव-गांव भ्रमण कर लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। उनके प्रयासों से 18 हजार निरक्षरों को साक्षर बनाया गया, जिनमें 12,569 महिलाएं और 5,431 पुरुष शामिल थे। इनमें लगभग 85 प्रतिशत महिलाएं अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ा वर्ग से थीं। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 10,659 नवसाक्षर महिलाओं और 4,231 पुरुषों को उत्तर साक्षरता अभियान से जोड़ा गया। उनके नेतृत्व में महिला साक्षरता दर वर्ष 1991 में 52 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2001 तक 75 प्रतिशत तक पहुंच गई। 163 गांवों में "जन विकास केंद्र" यानी पुस्तकालय स्थापित किए गए, वहीं 55 महिलाओं ने पांचवीं कक्षा की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

"पढ़वो–बढ़वो, स्कूल जाबो" अभियान से बदली बेटियों की जिंदगी

ग्रामीण गरीब परिवारों की बेटियों को शिक्षा से जोड़ने के लिए उन्होंने "पढ़वो-बढ़वो, स्कूल जाबो" अभियान चलाया। दत्तक पुत्री योजना के तहत दानदाताओं को प्रेरित कर बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित कराई गई। वर्ष 1997-98 से 2001 तक 325 निर्धन बालिकाओं की शत-प्रतिशत स्कूल उपस्थिति दर्ज कराई गई। बाद में जनसहयोग से तीन-तीन सौ रुपये की आर्थिक सहायता जुटाकर करीब 6000 बालिकाओं को शिक्षा के लिए मदद दी गई।

स्व–सहायता समूहों से 95 हजार महिलाएं हुईं आत्मनिर्भर

फाइल फोटो-तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से पद्मश्री का अवॉर्ड लेती शमशाद बेगम।

महिलाओं को संगठन की ताकत समझाते हुए उन्होंने 5500 स्व-सहायता समूहों का गठन कराया, जिनसे लगभग 95 हजार महिलाएं जुड़ीं। ये महिलाएं आज विभिन्न आर्थिक गतिविधियों से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। इसके अलावा 1400 संयुक्त देयता समूह, 71 कृषक क्लब और 325 पुरुष समूह भी स्वरोजगार से जोड़े गए। नाबार्ड एवं यूएनडीपी के सहयोग से भारत का पहला एसएचजी रिसोर्स सेंटर संचालित किया गया, जिसमें 45 हजार महिलाओं और 5 हजार पुरुषों को जोड़ते हुए 5000 स्व-सहायता समूह बनाए गए।

मजदूर से मालिक बनीं महिलाएं

ग्रामीण खेतिहर मजदूर महिलाओं को साहूकारों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए उन्होंने संयुक्त देयता समूहों का गठन किया। पहले महिलाएं अधिया, रेघा और कट्टू में खेती करती थीं और साहूकारों से 5 से 8 प्रतिशत ब्याज पर कर्ज लेकर खेती करने को मजबूर थीं। शमशाद बेगम ने महिलाओं को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ते हुए 1700 संयुक्त देयता समूह बनाए, जिनसे 8200 महिलाएं जुड़ीं और उन्हें लगभग 12 करोड़ रुपये का ऋण उपलब्ध कराया गया। धीरे-धीरे महिलाएं मजदूर से मालिक बनने लगीं। समय पर ऋण चुकाने के कारण पहले 3 प्रतिशत, फिर 1 से 2 प्रतिशत और बाद में बिना ब्याज के ऋण मिलने लगा।

गुल्लक से बैंक तक पहुंची महिलाओं की बचत

शमशाद बेगम और उनके पति रफीक खान ने महिलाओं को बचत और बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने की अनूठी पहल की। उस दौर में गांवों के लोग बैंक और पोस्ट ऑफिस से अनजान थे। महिलाएं घरों में गुल्लक में ही पैसे जमा करती थीं। उन्होंने "दीदी बैंक" की शुरुआत की, जिसमें 10 से 15 महिलाओं के समूह बनाए गए। सामूहिक बैंक खाते खुलवाए गए और महिलाओं को बचत का महत्व समझाया गया। धीरे-धीरे लोगों का भरोसा बैंकिंग व्यवस्था पर बढ़ा और महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत बनने लगीं।

14 जिलों में 75 हजार महिला कमांडो सक्रिय

साल 2006 में 100 महिलाओं को जोड़कर "महिला कमांडो" अभियान की शुरुआत की गई। आज 14 जिलों में करीब 75 हजार महिला कमांडो सक्रिय हैं। बालोद जिले की 421 पंचायतों के लगभग 700 गांवों में 12,500 महिला कमांडो निस्वार्थ भाव से कार्य कर रही हैं। महिला कमांडो नशा मुक्ति, स्वच्छता अभियान, महिला सुरक्षा, सामाजिक जागरूकता, बाल संरक्षण और शासन की योजनाओं के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यह पूरा अभियान गांधीवादी

सिलाई प्रशिक्षण कार्यशाला
सिलाई प्रशिक्षण कार्यशाला

विचारधारा पर आधारित है। महिला कमांडो को किसी प्रकार का वेतन, मानदेय या यात्रा भत्ता नहीं दिया जाता।

पुलिस प्रशासन ने भी सराहा महिला कमांडो अभियान

तत्कालीन दुर्ग एसपी दीपांशु काबरा ने वर्ष 2010 में महिला कमांडो को "पुलिस मित्र" का दर्जा दिया था। बाद में बालोद जिले के तत्कालीन एसपी शेख आरिफ हुसैन ने 200 महिला कमांडो को एसपीओ यानी स्पेशल पुलिस ऑफिसर का दर्जा दिया। इस पहल को बाद में तत्कालीन एसपी दीपक झा ने भी आगे बढ़ाया।महिला कमांडो अभियान को समय-समय पर वर्तमान डीजीपी अरुण देव गौतम, तत्कालीन आईजी रामगोपाल गर्ग, वर्तमान आईजी अभिषेक शांडिल्य, तत्कालीन कलेक्टर रानू साहू, इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल, वर्तमान कलेक्टर दिव्या उमेश मिश्रा, वर्तमान एसपी योगेश पटेल, एसएसपी दुर्ग विजय अग्रवाल सहित कई वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन मिलता रहा।

महाराष्ट्र और दिल्ली तक पहुंची महिला कमांडो की गूंज

महिला कमांडो की गूंज अब छत्तीसगढ़ से बाहर भी सुनाई दे रही है। छत्तीसगढ़ से प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र के नागपुर क्षेत्र के वलनी और आसपास के गांवों में भी महिला कमांडो तैयार हो चुकी हैं। वहां उन्नत भारत योजना के तहत महिला कमांडो को प्रोत्साहन मिल रहा है। दिल्ली में आयोजित किसान कुंभ में भी बालोद जिले और महाराष्ट्र की महिला कमांडो ने भागीदारी दर्ज कराई थी। महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए निशुल्क सिलाई प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। अब तक 180 महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर आर्थिक गतिविधियों से जुड़ चुकी हैं। महिला कमांडो आज बिहान समूह के माध्यम से जुड़कर विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में भी संलग्न हैं। कोई आचार-पापड़ का व्यवसाय कर रही है तो कोई दोना-पत्तल मशीन का संचालन कर आत्मनिर्भर बन रही है।

सड़क सुरक्षा से लेकर स्वास्थ्य जागरूकता तक निभा रहीं भूमिका

महिला कमांडो सड़क सुरक्षा अभियान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। लोगों को हेलमेट और सीट बेल्ट लगाने के लिए जागरूक किया जा रहा है। बालोद विकासखंड का बोरी और गुंडरदेही विकासखंड का जेवरतला एवं सिबदी गांव शत-प्रतिशत हेलमेट उपयोग के लिए मिसाल बन चुके हैं। शमशाद बेगम ने मितानिन कार्यक्रम, पल्स पोलियो, कुष्ठ उन्मूलन, टीबी जागरूकता और कुपोषण मुक्ति अभियान में भी सक्रिय भूमिका निभाई। मितानिन परियोजना की सफलता के बाद इसे पूरे छत्तीसगढ़ में लागू किया गया, जिससे संस्थागत प्रसव को बढ़ावा मिला और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी देखने को मिली।

मानव सेवा को बताया सबसे बड़ा धर्म

वर्ष 2003 में उन्होंने "सहयोगी जन-कल्याण समिति" का गठन किया। सभी धर्मों के लोगों को एक मंच पर जोड़ते हुए उन्होंने मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया। हर वर्ष 1 जनवरी को बालोद और दुर्ग में विश्व शांति के लिए "शिक्षा दीप प्रज्ज्वलन एवं प्रार्थना सभा" आयोजित की जाती है।

आज उनके कार्यों पर हो रहा पीएचडी शोध

जिस महिला ने कभी गांवों में रात 11 बजे तक जाकर निरक्षरों को पढ़ाया, आज उनके कार्यों और महिला कमांडो मॉडल पर शोधार्थी पीएचडी कर रहे हैं। उनकी जीवन यात्रा आज लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

काम से मिला देशभर में सम्मान

समाज सेवा, महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए शमशाद बेगम को अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें वर्ष 2018 में जानकी देवी बजाज पुरस्कार, वर्ष 2016 में सूर्यदत्ता नेशनल अवार्ड और भगवान महावीर सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने उन्हें पद्मश्री सम्मान प्रदान किया। वर्ष 2008 में यू.पी.ए. अध्यक्ष सोनिया गांधी ने उन्हें स्त्री शक्ति सम्मान से सम्मानित किया। वर्ष 2006 में तत्कालीन राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, मुख्यमंत्री रमन सिंह और राज्यपाल के.एम. सेठ द्वारा मिनीमाता सम्मान प्रदान किया गया।

इसके अलावा नारी शक्ति सम्मान, बिहान सम्मान, महात्मा ज्योतिबा फुले अवार्ड, नाबार्ड रायपुर राज्य स्तरीय सम्मान, प्रौढ़ शिक्षा विभाग सम्मान, महिला एवं बाल विकास विभाग सम्मान, राज्य साक्षरता प्राधिकरण सम्मान, कोरोना वारियर्स सम्मान और वर्ष 2024 में "बदलाव हमसे है" सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से उन्हें नवाजा जा चुका है।

संघर्ष से समाज परिवर्तन तक का सफर

एक मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार की महिला होकर सामाजिक बंधनों को तोड़ना, हजारों महिलाओं को साक्षर बनाना, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और समाज सेवा को आंदोलन का रूप देना आसान नहीं था। लेकिन शमशाद बेगम ने यह साबित कर दिया कि अगर इरादे मजबूत हों, तो एक महिला पूरे समाज की दिशा बदल सकती है।

अमानवीयता का परिचायक है बच्चों का अपहरण – बिजेंद्र सिन्हा दुर्ग

छत्तीसगढ़ में बच्चा चोरी की बढ़ती घटनाओं पर विशेष आलेख

आधुनिक समाज में अपराध व हिंसा के विभिन्न रूपों का विस्तार हो रहा है जिसमें मानव तस्करी सबसे भयावह व त्रासदी पूर्ण अपराध है।यह घृणित व्यापार है। इसमें कई तरह के अपराध शामिल हैं। अंग व्यापार, बच्चों से पशुवत कार्य , देह व्यापार , बन्धक मजदरी आदि के लिए महिलाओं बच्चों व पुरूषों के अपहरण व बेचे जाने के मामले लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। हाल ही में छत्तीसगढ़ के कुछ जिलों में बच्चों के अपहरण के मामले सामने आ रहे हैं। इस भयावह अपराध का चौतरफा विरोध होना चाहिए। सरकार इस तरह की अमानवीयता व क्रूर अपराधों पर शीघ्र ही अंकुश लगाए।

देश में मानव तस्करी बहुत बड़ी समस्या बन चुका है जिसका संबंध विदेशों से है। यह अनैतिक उद्योग का रूप ले चुका है। गरीबी, बेरोजगारी, पिछड़ापन, अशिक्षा व पलायन इस समस्या के मूल में है। इन मामलों में गरीबी व मजबूरी का फायदा उठाकर युवतियों को दिल दहला देने वाले यौन अपराध व यौन शोषण का शिकार बनाते हैं। पीड़ितों में 92 फीसदी महिलाएं व बच्चे शामिल होते हैं। गोद लेने की आड़ में भी बच्चों का अपहरण होता है। गौरतलब है इतिहास गवाह है कि पत्थर दिल इंसानों को भी बच्चों के सहज सरल व्यवहार ने द्रवित कर दिया व उनका हृदय व परिवर्तन हो गया।लेकिन बच्चों के अपहरण व मानव तस्करी में सक्रिय लोगों के संवेदनाहीनता व क्रूरता की पराकाष्ठा है जो मासूमों के शरीर से अंग निकालने, हत्याएँ, बालिकाओं व किशोरियों से अनैतिक कृत्य व अन्य भयावह अपराधों को अंजाम देते हैं। यह विडम्बना ही है कि ममतामयी, वात्सल्यमयी, प्रेम की प्रतिपूर्ति कई महिलाएं भी बच्चों की चोरी मानव तस्करी में सक्रिय हैं। महिलाओं का इस तरह असंवेदनशील क्रूर व गम्भीर अपराधों में शामिल होना घटते मानवीय संवेदना का सूचक है जो दुर्भाग्य पूर्ण है। विचारणीय है कि आपराधिक कृत्यों के कारण महिलाओं की जेलों में संख्या बढ़ रही है जो चिन्ताजनक है। जिस समाज में पशुओं से लेकर इंसानों तक के बच्चों के प्रति वात्सल्य, स्नेह की भावना पैदा हो वहां बच्चों के अंग तस्करी जैसे कार्य दुर्भाग्यपूर्ण है।

जिस संस्कृति में दूसरों के शरीर की रक्षा की महिमा का बखान किया गया हो उस समाज में देह व्यापार , अंग व्यापार व अन्य निर्दयता पूर्ण अपराध संवेदनाहीनता का परिचायक है। इन मामलों से जुड़े लोग अनाथ व बेसहारा बच्चों को आसानी से अपना शिकार बनाते हैं जो जीवन भर सुरक्षा को लेकर जुझते हैं। उनका जीवन शुरू होने से पहले ही त्रासदी व कष्ट में बदल जाता है। मानव तस्करी अपराधजनित मनोविकार है जिससे ग्रस्त लोग इन अपराधों को अंजाम दे रहे हैं। जहाँ एक तरफ आधुनिकता और विकास के नए कीर्तिमान कायम किए जा रहे हैं वहीं आधुनिक टेक्नोलॉजी व इतने कड़े कानून के बाद भी इन भयावह अपराधों के कारण मासूमों का अपहरण, अंग हटाना व हत्याएँ हो रही हैं तो इस बात पर चिन्तन आवश्यक हो जाता है कि तमाम विकास की नीतियों व विकास के इतने लम्बे सफर में हमारी सफलता इतने दुखद क्यों है। कुछ बुद्धिमानों व शिक्षित लोगों नें भी अंग निकालने व मानव तस्करी में सहयोग देकर व्यापक जनहानि पहुंचाई है। ऐसा विकास अधिक मायने नहीं रखता जहाँ मानवीय मूल्यों का कोई स्थान न हो।

छत्तीसगढ़ में भी मानव तस्करी के मामले अत्यंत चिन्ताजनक हैं। यहाँ आए दिन गाँवों व शहरों में बच्चों के चोरी के मामले लगातार तेजी से सामने आ रहे हैं। एक आंकड़े के अनुसार मानव तस्करी में छत्तीसगढ़ देश के शीर्ष 5 राज्यों में शामिल है। यह समाज व सरकार के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। इन संवेदनाहीन व अमानवीय अपराधों को रोकने के लिए सरकार को प्रतिबद्ध होना चाहिए। विशेष रणनीति व समुचित समाधान खोजकर ही इस समस्या का समाधान सम्भव हो सकेगा। गरीबी दूर करने वाले सभी व्यवहारिक उपाय उपयोग में लाये जाने चाहिए। बाल मजदूरी के उन्मूलन की भी जरूरत है। पीड़ितों को रोजगार प्रदान कर उनके आर्थिक, शैक्षणिक व सामाजिक उत्थान किया जाना चाहिए। उनके उत्थान के लिए अनेक योजनाओं को प्रारम्भ किया जाना चाहिए जिससे उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव दिख सके। कानून व्यवस्था के साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण व मानव जीवन मूल्यों के विकास पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तब तक समाज में ऐसे अपराधों को खत्म करना मुश्किल होगा।

यह आपराधिक मामला जितना सरकार प्रशासन कानून व्यवस्था का है उतना ही समाज सुधार का भी है। बच्चों के अपहरण व मानव तस्करी के स्थायी व पूर्ण समाधान के लिए मनुष्य के मानवीय सद्गुणों दया, प्रेम, करूणा ,आत्मीयता ,संवेदना व सहिष्णुता आदि गुणों को विकसित करने की जरूरत है।इससे शान्ति पूर्ण व अपराधमुक्त समाज का निर्माण हो सकत है। पीड़ितों के संरक्षण व पुनर्वास की जरुरत है। साथ ही पीड़ितों को सम्मान से जीने लायक स्थिति में लाया जाए। सरकारों को भावनात्मक व अन्य मुद्दों के अलावा महिलाओं व बच्चों की शान्ति व सुरक्षा के मुद्दों पर ध्यान देने की जरूरत है।

छत्तीसगढ़ का 'मिनी त्र्यंबकेश्वर' बना आस्था और पर्यटन का नया केंद्र

ओना-कोना मंदिर में उमड़ रही श्रद्धालुओं की भीड़

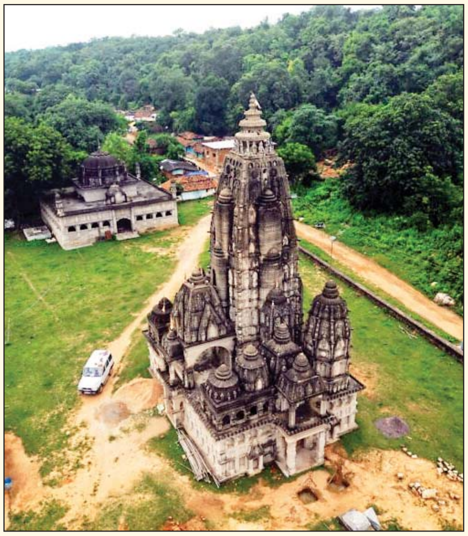

श्री त्र्यंबकेश्वर धाम ओनाकोना (जिला-बालोद)
सेवक

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

बालोद जिले के गुरूर विकासखंड में स्थित प्रसिद्ध ओना-कोना मंदिर आज छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों में अपनी विशेष पहचान बना चुका है। गंगरेल बांध के बैकवाटर के किनारे स्थित यह भव्य मंदिर अपनी बिना बीम वाली अद्भुत वास्तुकला, विशाल शिवलिंग, प्राकृतिक सौंदर्य और हाल ही में संपन्न हुई भव्य प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव के कारण लगातार श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है।

बिना बीम का अनोखा मंदिर बना आकर्षण का केंद्र

ओना-कोना मंदिर को आधुनिक इंजीनियरिंग और प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का अद्भुत संगम माना जा रहा है। मंदिर का पूरा ढांचा बिना किसी बीम (Beamless Structure) के तैयार किया गया है, जो इसे बेहद खास बनाता है। मंदिर का निर्माण धमतरी निवासी तीरथराज फूटान द्वारा महाराष्ट्र के प्रसिद्ध त्र्यंबकेश्वर शिव मंदिर की तर्ज पर कराया गया है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर खजुराहो शैली की आकर्षक नक्काशी और देवी-देवताओं की मूर्तियां इसकी भव्यता को और बढ़ाती हैं।

राजस्थान से लाई गई 12 मूर्तियों की हुई प्राण-प्रतिष्ठा

हाल ही में मंदिर परिसर में पांच दिवसीय भव्य प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया, जिसमें वैदिक मंत्रोच्चार एवं विशेष यज्ञ-हवन के साथ राजस्थान से लाई गई 12 देवी-देवताओं की मूर्तियों की स्थापना की गई। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में स्थापित विशाल शिवलिंग की जलहरी लगभग 3 टन शुद्ध पीतल से निर्मित बताई जा रही है, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष

आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।

गंगरेल बैकवाटर बना 'समुद्र जैसा' नजारा

मंदिर के सामने फैला गंगरेल बांध का विशाल जल क्षेत्र लोगों को समुद्र जैसा अनुभव कराता है। एक ओर हरी-भरी पहाड़ियां और दूसरी ओर अथाह जलराशि ओना-कोना को छत्तीसगढ़ का उभरता हुआ इको-टूरिज्म स्पॉट बना रही है। यहां पर्यटकों के लिए बोटिंग सुविधा भी संचालित की जा रही है। सप्ताहांत और छुट्टियों के दिनों में बड़ी संख्या में लोग यहां परिवार सहित पिकनिक मनाने पहुंच रहे हैं।

प्रशासन द्वारा सुविधाओं का किया जा रहा विस्तार

बालोद जिला प्रशासन एवं स्थानीय पंचायत द्वारा क्षेत्र में सड़क संपर्क, पेयजल व्यवस्था और अन्य मूलभूत सुविधाओं को तेजी से विकसित किया जा रहा है। यहां सौर ऊर्जा आधारित पेयजल प्रणाली भी स्थापित की गई है, जिससे यह क्षेत्र मॉडल पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है।

Shot on OnePlus

प्रवेश शुल्क और विशेष नियम

मंदिर परिसर की स्वच्छता एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए ग्राम समिति द्वारा 20 से 50 तक का प्रवेश शुल्क लिया जाता है। वहीं परिसर में मांसाहारी भोजन पूरी तरह प्रतिबंधित रखा गया है।

यहां तक पहुंचना बेहद आसान

ओना-कोना मंदिर राष्ट्रीय राजमार्ग 30 (रायपुर-बस्तर मार्ग) से गुरूर के पास केवल लगभग 5 किलोमीटर अंदर स्थित है।

⏭ मुख्य दूरी:

- ⏭ धमतरी से लगभग 35 किलोमीटर
- ⏭ बालोद से लगभग 50 किलोमीटर
- ⏭ रायपुर से लगभग 90 किलोमीटर

धार्मिक आस्था के साथ पर्यटन का नया केंद्र

प्राकृतिक सौंदर्य, आध्यात्मिक वातावरण और अद्भुत वास्तुकला के कारण ओना-कोना मंदिर अब केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि बालोद जिले की नई पर्यटन पहचान बनता जा रहा है। श्रद्धालुओं का मानना है कि यहां पहुंचकर उन्हें आध्यात्मिक शांति के साथ प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य का भी अनुभव होता है।

38 साल तक शिक्षा की अलख जगाने वाले राज्यपाल पुरस्कृत प्राचार्य दयालूराम पिकेश्वर सेवानिवृत्त

चिमनी की रोशनी में पढ़ने वाले शिक्षक ने संघर्ष से रची प्रेरणा की मिसाल

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

डौंडीलोहारा वनांचल क्षेत्र के एक साधारण किसान परिवार से निकलकर शिक्षा जगत में अपनी अलग पहचान बनाने वाले राज्यपाल पुरस्कृत प्राचार्य दयालूराम पिकेश्वर 31 जनवरी 2026 को शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हो गए। करीब 38 वर्षों तक शिक्षा सेवा देने वाले दयालूराम पिकेश्वर का पूरा जीवन संघर्ष, अनुशासन, समर्पण और शिक्षा के प्रति निष्ठा की ऐसी प्रेरणादायक कहानी है, जो आने वाली पीढ़ियों को लगातार प्रेरित करती रहेगी। ग्राम भंवरमरा (नेतामटोला) के सीमित संसाधनों वाले परिवेश से निकलकर उन्होंने यह साबित किया कि कठिन परिस्थितियां कभी भी मजबूत इरादों को रोक नहीं सकतीं।

चिमनी की रोशनी में पढ़कर तय किया सफलता का सफर

दयालूराम पिकेश्वर का जन्म 24 जनवरी 1964 को स्वर्गीय घनाराम एवं स्वर्गीय बरमती बाई के यहां एक साधारण किसान परिवार में हुआ। उस दौर में गांवों में शिक्षा और सुविधाओं का अभाव था, लेकिन उन्होंने संघर्षों के बीच भी पढ़ाई नहीं छोड़ी।उन्होंने कक्षा पहली से आठवीं तक की पढ़ाई गांव में ही पूरी की। बिजली नहीं होने के कारण वे चिमनी की रोशनी में पढ़ाई करते थे और रोजाना करीब दो किलोमीटर जंगल के रास्ते पैदल चलकर स्कूल पहुंचते थे। यही संघर्ष उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी ताकत बना।

पिता के निधन के बाद भी नहीं टूटा हौसला

उच्च शिक्षा के लिए उन्हें गांव से दूर जाना पड़ा। कक्षा नौवीं के लिए वे लगभग 30 किलोमीटर दूर बड़गांव पहुंचे, जहां छात्रावास में रहकर पढ़ाई की। इसी दौरान दसवीं बोर्ड परीक्षा के समय उनके पिता का निधन हो गया, लेकिन उन्होंने परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानी। उन्होंने शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव से वर्ष 1988 में राजनीति विज्ञान विषय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की और आगे एलएलबी की पढ़ाई भी प्रारंभ की।

1989 से शुरू हुआ शिक्षकीय सेवा का गौरवशाली सफर

दयालूराम पिकेश्वर ने 03 मार्च 1989 को शासकीय प्राथमिक शाला गंजईडीह में सहायक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रारंभ कीं। वर्ष 2008 तक उन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया। इसके बाद वे शासकीय प्राथमिक शाला भीमकन्हार में प्रधान पाठक बने। आगे चलकर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़गांव में उच्च वर्ग शिक्षक तथा बाद में शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मड़ियाकट्टा में प्रधान पाठक के रूप में कार्यरत रहे।

20 सितंबर 2011 से 28 नवंबर 2025 तक मड़ियाकट्टा विद्यालय में उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने, विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने और विद्यालय को नई पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के आधार पर 29 नवंबर 2025 को उन्हें प्राचार्य पद पर पदोन्नत कर शासकीय हाई स्कूल संबलपुर में पदस्थ किया गया। 62 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद वे 31 जनवरी 2026 को शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए।

सेवा निवृत्ति के बाद भी निभाई जिम्मेदारी

औपचारिक सेवा निवृत्ति के बाद भी दयालूराम पिकेश्वर ने शिक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी और समर्पण को जारी रखा। वे वर्तमान शिक्षा सत्र के अंत तक विद्यालयीन कार्यों और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में सक्रिय रूप से जुड़े रहे। शिक्षकों, विद्यार्थियों और ग्रामीणों के बीच उनकी कार्यशैली और सरल व्यवहार हमेशा प्रेरणा का केंद्र बना रहा।

राज्यपाल पुरस्कार सहित कई सम्मान से हुए सम्मानित

दयालूराम पिकेश्वर को शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। वर्ष 2021 में उन्हें प्रतिष्ठित राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

परोपकाराय सतां विभूतयः

इसके अलावा उन्हें

- ⏭ **ज्ञानदीप पुरस्कार (2019)**
- ⏭ **श्रेष्ठ प्रधान पाठक पुरस्कार (2019)**
- ⏭ **स्वच्छता पुरस्कार (2017)**
- ⏭ **राष्ट्रीय गौरव शिक्षक सम्मान**
- ⏭ **शिक्षक रत्न सम्मान**

सहित कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया।

शिक्षा को बनाया समाज सुधार का माध्यम

उन्होंने शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाया। उनके नेतृत्व में बस्ता बोझ मुक्त शाला, बालिका शिक्षा, नशा मुक्ति अभियान, स्वच्छता अभियान, साक्षरता अभियान, वृक्षारोपण, पल्स पोलियो अभियान और पालक-बालक सम्मेलन जैसे कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किए गए। उनके प्रयासों से विद्यालय और समाज के बीच मजबूत संबंध स्थापित हुए और शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी।

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मड़ियाकट्
आपका हार्दिक अभिनंदन करता है.

आगामी सत्र में होगी भव्य विदाई

हालांकि दयालूराम पिकेश्वर औपचारिक रूप से सेवा निवृत्त हो चुके हैं, लेकिन उनकी भव्य विदाई आगामी शिक्षा सत्र में आयोजित की जाएगी। शिक्षा विभाग, सहयोगी शिक्षक, विद्यार्थी और सामाजिक संगठन उनके सम्मान में विशेष विदाई समारोह की तैयारी कर रहे हैं, जिसमें उनके 38 वर्षों के योगदान को याद किया जाएगा।

सेवा निवृत्ति के बाद भी प्रेरणा बनकर रहेंगे

- ⏭ दयालूराम पिकेश्वर का जीवन यह संदेश देता है कि —
- ⏭ "संघर्ष चाहे जितना बड़ा हो, अगर लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची हो, तो सफलता अवश्य मिलती है।"
- ⏭ हाथों को थाम कर मंजिल की ओर ले चले गए,
- ⏭ कामयाबी और तरक्की की सौगात दे चले गए।
- ⏭ आज विदा होकर भी, शिक्षा जगत को प्रेरणा दे चले गए।"

बीड़ी कारोबारी से बने 'ग्रीन वॉरियर': गुरुर के जयंत किरी ने बदली पर्यावरण संरक्षण की तस्वीर

गुरुर/बालोद ✍दर्शन बालोद✍

आज जब शहरों और कस्बों में कंक्रीट के जंगल तेजी से बढ़ रहे हैं और हरियाली सिमटती जा रही है, ऐसे समय में गुरुर नगर के समाजसेवी एवं पर्यावरण प्रेमी जयंत किरी पिछले 11 वर्षों से लगातार पर्यावरण संरक्षण और समाजसेवा का ऐसा मिशन चला रहे हैं, जो पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणा बन चुका है।

हजारों पौधे लगाकर और बांटकर जगाई हरियाली की अलख, तहसील कार्यालय में सहयोग पार्क उनकी सफलता का सबूत

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर उनकी यह पहल इसलिए भी खास हो जाती है, क्योंकि उन्होंने न केवल हजारों पौधे लगाए और लोगों में वितरित किए, बल्कि उन्हें संरक्षित करने की जिम्मेदारी भी निभाई। अब उनकी मेहनत से लगाए गए कई पौधे विशाल पेड़ों का रूप ले चुके हैं और लोगों को छांव व स्वच्छ वातावरण दे रहे हैं।

तहसील कार्यालय में लगवाया वाटर कूलर, लोगों को मिलेगी राहत

गुरुर तहसील कार्यालय में वर्ष 2024 में जयंत किरी एवं उनके परिवार द्वारा जनसुविधा को ध्यान में रखते हुए वाटर कूलर प्रदान किया गया था, तहसील कार्यालय प्रशासन ने इस सहयोग के लिए किरी परिवार का आभार व्यक्त किया। इस तरह के सेवा कार्य समाज में सकारात्मक प्रेरणा देते हैं। अधिकारियों ने बताया कि गुरुर तहसील परिसर में आज जो हरियाली दिखाई देती है, उसके पीछे भी किरी परिवार का वर्षों का योगदान है।

2001 में बना था 'सहयोग पार्क', आज बना हरियाली का प्रतीक

तहसील परिसर में वर्ष 2001 में "सहयोग पार्क" की स्थापना की गई थी। उस समय छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी की गरिमामयी उपस्थिति में वृक्षारोपण हुआ था। इस अभियान के प्रेरणास्त्रोत तत्कालीन दुर्ग कलेक्टर आईसीपी केशरी (IAS) रहे। पार्क को विकसित करने में किरी परिवार का विशेष सहयोग रहा। आज यह सहयोग पार्क तहसील कार्यालय आने वाले लोगों को घनी छांव और प्राकृतिक सुकून प्रदान कर रहा है।

6000 से अधिक पौधों का वितरण, हजारों पौधे आज बन चुके हैं वृक्ष

50 वर्षीय जयंत किरी बीड़ी उद्योग से जुड़े होने के बावजूद वर्षों से पर्यावरण संरक्षण को जीवन का मिशन बनाए हुए हैं। उन्होंने वन विभाग एवं उद्यानिकी विभाग के सहयोग से अब तक 6000 से अधिक फलदार एवं

छायादार पौधों का निःशुल्क वितरण किया है। नगर पंचायत, स्कूल, कॉलेज, गौशालाओं, मुक्तिधाम और पंचायत परिसरों में सैकड़ों पौधे लगाए गए, जिनमें से कई आज विशाल वृक्ष बन चुके हैं।

जयंत किरी का कहना है—"पेड़ सिर्फ ऑक्सीजन नहीं देते, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का जीवन बचाते हैं। अगर अभी नहीं जागे तो आने वाले समय में तापमान 55 से 60 डिग्री तक पहुंच सकता है।"

100 हेलमेट बांटकर भी चलाया जागरूकता अभियान

जयंत किरी सिर्फ पर्यावरण तक सीमित नहीं हैं। सड़क हादसों की रोकथाम के लिए उन्होंने पिछले वर्ष अपने खर्च पर लगभग 100 हेलमेट वितरित किए थे। इतना ही नहीं, हेलमेट पहनकर वाहन चलाने वालों को गुलाब भेंट कर सम्मानित भी किया गया था।

दिव्यांगों के लिए भी बने सहारा

समाजसेवा के क्षेत्र में किरी परिवार का योगदान लगातार जारी है। जयंत किरी ने अपने पिता सुंदरलाल किरी की प्रेरणा से गुरुर, चारामा और धमतरी क्षेत्र के दिव्यांगजनों को 50 से अधिक ट्राइसिकल एवं अन्य सहायक सामग्री वितरित की है।

पेयजल
किरी परिवार द्वारा
वाटर कूलर प्रदत्त
तहसील कार्यालय गुरुर

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में निभाई बड़ी भूमिका

20 जुलाई 2025 को जिला प्रशासन द्वारा चलाए गए "एक पेड़ मां के नाम" अभियान में जयंत किरी को ब्लॉक समन्वयक और डिस्ट्रिक्ट प्लांटेशन कमेटी का सदस्य बनाया गया था। वन विभाग के अनुसार इस अभियान के तहत जिलेभर में 2 लाख से अधिक पौधे लगाए गए। उपमुख्यमंत्री ने भी वेबएक्स के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने वालों से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया था।

बिना प्रचार के वर्षों से जारी है हरियाली का मिशन

सबसे खास बात यह है कि जयंत किरी वर्षों से बिना किसी प्रचार-प्रसार के लगातार सेवा और पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। वे स्वयं पौधे लगाते हैं, लोगों को जागरूक करते हैं और संरक्षण के लिए प्रेरित भी करते हैं। आज गुरुर तहसील परिसर की हरियाली, सहयोग पार्क और नगर में खड़े सैकड़ों पेड़ उनकी वर्षों की मेहनत और समर्पण की जीवंत मिसाल बन चुके हैं।

एकता, अधिकार और सामाजिक बदलाव का संदेश: सिंघोला में गूंजा महार/महरा समाज का प्रदेश स्तरीय अधिवेशन

“खंड-खंड नहीं, संगठित होकर आगे बढ़े समाज” : अशोक चांद

कुलेश्वर प्रसाद आसनिक की रिपोर्ट राजनांदगांव/बालोद

धमनसरा परगना अंतर्गत ग्राम सिंघोला में आयोजित छत्तीसगढ़ महार/महरा झरिया (शाखा) समाज का प्रदेश स्तरीय वार्षिक अधिवेशन केवल एक सामाजिक कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि यह समाज की एकता, अधिकार, प्रतिनिधित्व और सामाजिक सुधार की नई दिशा तय करने वाला ऐतिहासिक मंच बन गया। प्रदेश अध्यक्ष अशोक चांद के नेतृत्व में आयोजित इस विशाल अधिवेशन में प्रदेशभर से समाज के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, युवा और महिलाएं बड़ी संख्या में शामिल हुए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संतोष अग्रवाल (विधायक प्रतिनिधि), मधुसूदन यादव (महापौर एवं पूर्व सांसद राजनांदगांव), कोमल राजपूत (भाजपा जिलाध्यक्ष राजनांद-गांव), श्रीमती देवकुमारी साहू (जिला पंचायत सदस्य), खुशबू साहू (जनपद सदस्य) एवं मुकेश कुमार साहू (सरपंच ग्राम पंचायत सिंघोला) उपस्थित रहे। वहीं समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों में मंतराम राम रायपुरिया, सुनील बंबोड़े, नेमसिंह कौशिक, पवन खापर्डे, किशोर रायपुरिया, बंटी रामटेके, डिगेश्वर अंगारे, संजीव कुमार वर्मा, दिनेश कुमार मेश्राम, संतराम आसनी, जितेंद्र कुमार मेश्राम, प्रमोद रायपुरिया, कुलेश्वर आसनी, शुभम बंबोड़े, रघुवीर रामटेके, कुबेर बघेल, पदुम गंगवीर, यादराम पटेल सहित विभिन्न जिलों और परगनाओं के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

14 लाख आबादी, फिर भी राजनीतिक प्रतिनिधित्व नहीं

अधिवेशन के दौरान समाज की ओर से मुख्य अतिथि संतोष अग्रवाल को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया गया कि छत्तीसगढ़ में महार/महरा समाज की आबादी लगभग 14 लाख है और समाज अनुसूचित जाति वर्ग में आता है। बावजूद इसके, राज्य की 19 अनुसूचित जाति आरक्षित विधानसभा सीटों में अब तक समाज को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। समाज की ओर से आगामी विधानसभा चुनाव में कम से कम पांच आरक्षित सीटों पर महार/महरा समाज के प्रत्याशियों को अवसर देने की मांग रखी गई। इस पर संतोष अग्रवाल ने समाज को आश्वस्त करते हुए कहा कि समाज की यह मांग न्यायसंगत है और समाज को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास किए जाएंगे।

सामाजिक सुधार की नई पहल

अधिवेशन में समाज के भीतर फैली पुरानी और खर्चीली परंपराओं को समाप्त करने पर भी जोर दिया गया। अशोक चांद ने कहा कि मृत्यु भोज जैसी प्रथाओं को पूर्णतः बंद किया जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि शोक के समय केवल परिवार के लोग ही पितामढ़ी (कफन) का उपयोग करें और अन्य लोग आर्थिक सहयोग करें।विवाह समारोहों में फिजूलखर्ची

“बंटकर नहीं, संगठित होकर बढ़े समाज”

प्रदेश अध्यक्ष अशोक चांद ने अपने संबोधन में समाज को एकजुट रहने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जो लोग स्वयं को बया या मैथिल क्षत्रिय मानते हैं, वे भी मूल रूप से महार/महरा समाज का हिस्सा हैं। उन्होंने समाज को खंड-खंड में बांटने के बजाय मुख्यधारा से जुड़कर संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। उन्होंने जाति प्रमाण पत्र बनाने में आने वाली समस्याओं पर भी चिंता जताई और कहा कि यदि कोई अधिकारी या कर्मचारी समाज के लोगों को अनावश्यक रूप से परेशान करेगा, तो समाज उसके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए बाध्य होगा।

रोकने के लिए भी महत्वपूर्ण बातें रखी गईं। उन्होंने विवाह में सीमित साड़ी लेन-देन, डीजे पर प्रतिबंध और कर्ज लेकर शादी न करने की अपील की। साथ ही शासन द्वारा आयोजित आदर्श विवाह योजनाओं का लाभ लेने का भी आह्वान किया गया।

महिलाओं और युवाओं को दी नई दिशा

कार्यक्रम में श्रीमती विमला कामड़े ने विवाह योग्य युवक-युवतियों के संबंध में समाज को व्यवहारिक सोच अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि केवल सरकारी नौकरी के इंतजार में विवाह को टालना उचित नहीं है। सही समय पर योग्य जीवनसाथी का चयन समाज और परिवार दोनों के लिए बेहतर होता है। बालोद जिला उपाध्यक्ष संतराम आसनी ने समाज में जागरूकता और नई सोच की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्षों तक समाज जाति प्रमाण पत्र जैसी समस्याओं से जूझता रहा, लेकिन संगठनात्मक प्रयासों से अब परिस्थितियां बदल रही हैं। उन्होंने युवाओं से समाज के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया।

गीत, संस्कृति और संगठन का अद्भुत संगम

अधिवेशन के दौरान संतराम आसनी द्वारा महार/महरा समाज के गोत्रों पर रचित विशेष गीत प्रस्तुत किया गया, जिसे सुनकर पूरा पंडाल तालियों से गूंज उठा। कार्यक्रम में सामाजिक चेतना के साथ सांस्कृतिक रंग भी देखने को मिला। बालोद जिला अध्यक्ष दिनेश कुमार मेश्राम ने कहा कि बालोद जिला समाज के हर कार्यक्रम में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है और आगे भी समाज के संगठन को मजबूत करने में सक्रिय रहेगा। उन्होंने युवाओं को नशा और असामाजिक गतिविधियों से दूर रहकर समाज सेवा की दिशा में आगे आने का संदेश दिया।

2027 में होगा नया प्रांतीय चुनाव

प्रदेश अध्यक्ष अशोक चांद ने अपने संबोधन में घोषणा की कि वर्ष 2027 में पुरूर परगना (परिक्षेत्र) के तत्वावधान में प्रदेश स्तरीय महासभा एवं प्रांतीय पदाधिकारियों का चुनाव आयोजित किया जाएगा।

सिर्फ अधिवेशन नहीं, सामाजिक जागरण का मंच

सिंघोला में आयोजित यह अधिवेशन केवल औपचारिक बैठक नहीं था, बल्कि समाज के राजनीतिक अधिकार, सामाजिक सुधार, संगठनात्मक एकता और नई पीढ़ी को दिशा देने वाला प्रेरणादायी मंच बनकर उभरा। समाज के लोगों ने इसे सामाजिक चेतना और बदलाव की नई शुरुआत बताया।

राजहरा की बेटी पूर्वा ने रचा सफलता का नया इतिहास, 12वीं कॉमर्स में 95% अंक लाकर बढ़ाया शहर का मान

मेहनत, लगन और अनुशासन से हासिल की बड़ी उपलब्धि, परिवार और स्कूल में खुशी की लहर

दल्लीराजहरा ✍दर्शन बालोद✍

कहते हैं कि मेहनत और आत्मविश्वास के दम पर हर सपना पूरा किया जा सकता है, और इसे सच साबित कर दिखाया है दल्लीराजहरा की होनहार बेटी कुमारी पूर्वा सिंह ने। सीबीएसई 12वीं बोर्ड परीक्षा में कॉमर्स संकाय से शानदार 95 प्रतिशत अंक अर्जित कर पूर्वा ने न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे शहर और स्कूल का नाम गौरवान्वित किया है। राजहरा निवासी अजय सिंह परिहार एवं श्रीमती प्रेमा सिंह की सुपुत्री पूर्वा सिंह शुरू से ही पढ़ाई में मेधावी रही हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा डीएव्ही स्कूल दल्लीराजहरा से प्राप्त की, जहां 10वीं बोर्ड परीक्षा में भी उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 93 प्रतिशत अंक हासिल किए थे।

भिलाई जाकर भी जारी रखा मेहनत का सफर

बेहतर शिक्षा और अपने सपनों को नई उड़ान देने के लिए पूर्वा ने आगे की पढ़ाई हेतु सेक्टर-10 स्कूल भिलाई में प्रवेश लिया। वहां भी उन्होंने निरंतर मेहनत, अनुशासन और समर्पण के साथ अध्ययन जारी रखा और 12वीं कॉमर्स में 95 प्रतिशत अंक हासिल कर बड़ी सफलता प्राप्त की। पूर्वा की इस उपलब्धि से परिवार में खुशी का माहौल है। उनके पिता अजय सिंह परिहार दल्लीराजहरा स्थित सिंह ट्रांसपोर्ट कंपनी के प्रबंधक हैं, वहीं माता श्रीमती प्रेमा सिंह वीरांगना ग्रुप भिलाई की सक्रिय सदस्या हैं।

भाई भी कर रहे इंजीनियरिंग की पढ़ाई

पूर्वा के बड़े भाई हर्षित परिहार भी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं और वर्तमान में पारुल यूनिवर्सिटी गुजरात में बीटेक इंजीनियरिंग द्वितीय वर्ष के छात्र हैं। ऐसे में पूरा परिवार शिक्षा और मेहनत की मिसाल बनकर सामने आया है।

शुभकामनाओं का लगा तांता

पूर्वा सिंह की शानदार सफलता पर उनके इष्ट मित्रों, शिक्षकों, समाजजनों एवं वीरांगना समूह भिलाई के पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी हैं।

नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनी पूर्वा

पूर्वा की यह सफलता उन सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा है जो बड़े सपने देखते हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद निरंतर मेहनत और लक्ष्य के प्रति समर्पण से सफलता कैसे हासिल की जाती है, यह पूर्वा सिंह ने साबित कर दिखाया है।

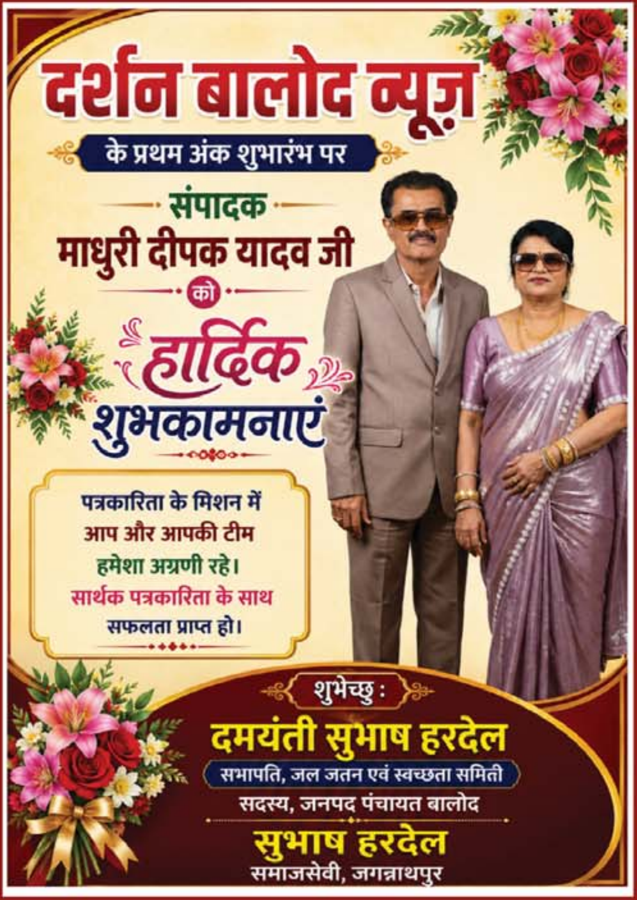
दर्शन बालोद न्यूज़
के प्रथम अंक शुभारंभ पर
संपादक
माधुरी दीपक यादव जी
को
हार्दिक शुभकामनाएं

पत्रकारिता के मिशन में
आप और आपकी टीम
हमेशा अग्रणी रहे।
सार्थक पत्रकारिता के साथ
सफलता प्राप्त हो।

शुभेच्छु :
दमयंती सुभाष हरदेल
सभापति, जल जतन एवं स्वच्छता समिति
सदस्य, जनपद पंचायत बालोद
सुभाष हरदेल
समाजसेवी, जगन्नाथपुर

दर्शन बालोद न्यूज
के प्रथम अंक की
शुभारंभ
पर
संपादक
माधुरी दीपक यादव जी
को हार्दिक शुभकामनाएं

आपका यह प्रयास
समाज के लिए
उपयोगी साबित होगा
समस्त टीम को
उज्जवल भविष्य की
शुभकामनाएं

शुभेच्छु :
दयालु राम पीकेश्वर
राज्यपाल पुरस्कृत
सेवानिवृत प्राचार्य

दर्शन बालोद न्यूज़
के प्रथम अंक शुभारंभ पर
संपादक भाभी
माधुरी दीपक यादव जी
को
हार्दिक शुभकामनाएं

पत्रकारिता में आपको
एक नया मुकाम हासिल हो
और हम समस्त महिलाओं के लिए
प्रेरणा का स्रोत बने।

पूजा वैभव साहू
सदस्य जिला पंचायत बालोद

वैभव साहू
संस्थापक
माटी युवा कल्याण संगठन

दर्शन बालोद न्यूज़
के प्रथम अंक के प्रकाशन पर
बहन
माधुरी दीपक यादव को
हार्दिक शुभकामनाएं

आपका प्रयास
हम सभी महिलाओं के लिए
भी प्रेरणादायक है,
आपकी सफलता
निरंतर बढ़ती रहे!

शुभेच्छु :
प्रतिभा संतोष चौधरी
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद बालोद

दर्शन बालोद न्यूज
दर्शन बालोद न्यूज़
सार्थक पत्रकारिता
समाज के लिए
संकल्पित प्रयास

दर्शन बालोद न्यूज़

के शुभारंभ पर

संपादक

माधुरी दीपक यादव जी को

हार्दिक शुभकामनाएं

"पत्रकारिता के क्षेत्र में
आप इसी तरह निरंतर प्रगति करते रहे....
आपका यह प्रयास समाज के लिए
सूचना, जागरूकता और सच्चाई की
नई उम्मीद बने।"

शुभेच्छु

योगेश्वर देशमुख

प्रदेश सह संयोजक किसान मोर्चा
रसायन एवं उर्वरक बीज प्रकल्प छग.

अध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश
युवा कुर्मी क्षत्रिय समाज

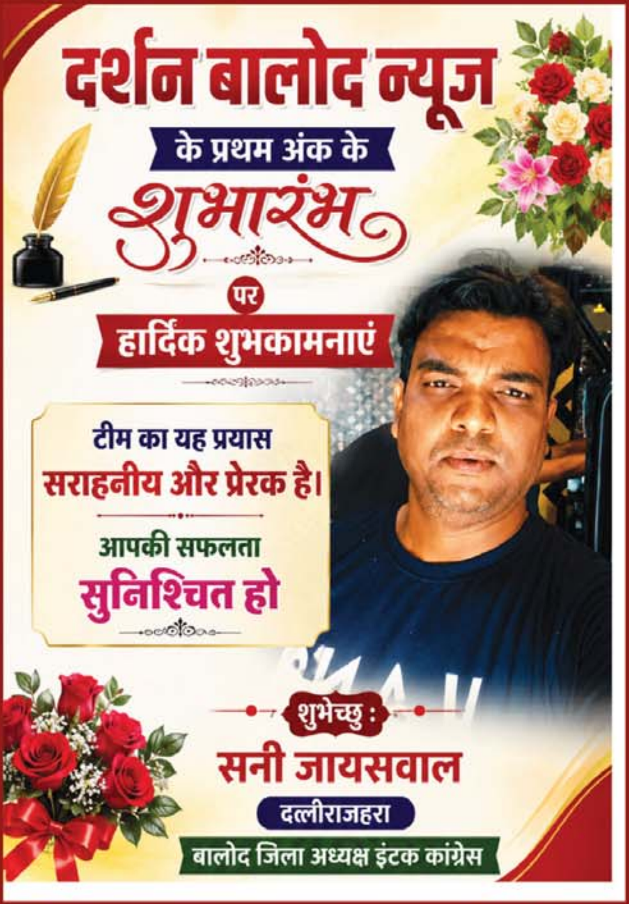

दर्शन बालोद न्यूज

के प्रथम अंक के

शुभारंभ

पर

हार्दिक शुभकामनाएं

टीम का यह प्रयास
सराहनीय और प्रेरक है।

आपकी सफलता
सुनिश्चित हो

शुभेच्छु :

सनी जायसवाल

दल्लीराजहरा

बालोद जिला अध्यक्ष इंटक कांग्रेस

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक शुभारंभ की

हार्दिक शुभकामनाएं

14 जून
विश्व
रक्तदान
दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

करिए रक्तदान,
दीजिए जीवनदान

रक्तवीर
लाल रघुवीर सिंह ठाकुर

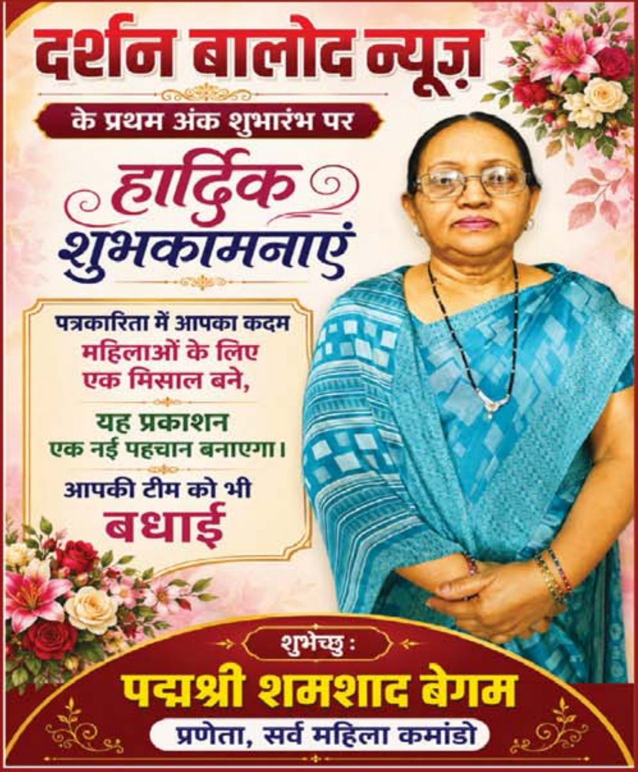

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक शुभारंभ पर

हार्दिक
शुभकामनाएं

पत्रकारिता में आपका कदम
महिलाओं के लिए
एक मिसाल बने,

यह प्रकाशन
एक नई पहचान बनाएगा।

आपकी टीम को भी
बधाई

शुभेच्छु :

पद्मश्री शमशाद बेगम

प्रणेता, सर्व महिला कमांडो

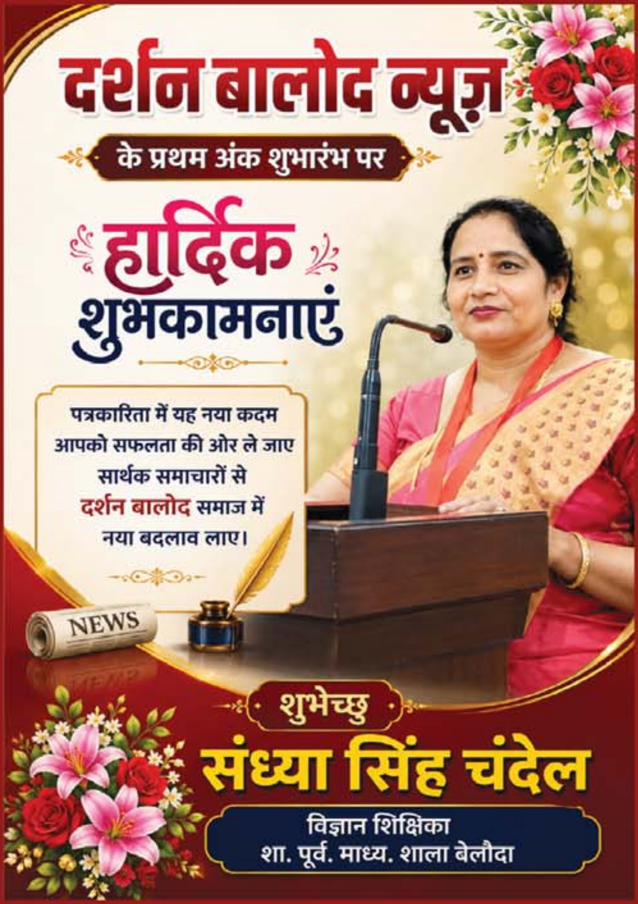

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक शुभारंभ पर

हार्दिक शुभकामनाएं

पत्रकारिता में यह नया कदम
आपको सफलता की ओर ले जाए
सार्थक समाचारों से
दर्शन बालोद समाज में
नया बदलाव लाए।

शुभेच्छु

संध्या सिंह चंदेल

विज्ञान शिक्षिका
शा. पूर्व. माध्य. शाला बेलौदा

DB NEWS
दर्शन बालोद न्यूज
PRINT • WEB • DIGITAL MEDIA

दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं सहयोगियों का हम आभार व्यक्त करते हैं .. आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद , आपका स्नेह और आशीर्वाद हमारी मीडिया के प्रति इसी तरह आगे भी कायम रहे इन्ही कामनाओं के साथ

DB News
A Digital Media
Deepak Yadav
DAILY BALOD NEWS

माधुरी दीपक यादव
संपादक दर्शन बालोद

दीपक यादव प्रबंध
निदेशक दर्शन बालोद

आगामी अंक में खबर और विज्ञापन प्रकाशन हेतु संपर्क करें 9755235270 पर और अपना स्थान जल्द से जल्द सुरक्षित करें..

विशेष सूचना : दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक को घर बैठे प्राप्त करने के लिए हमारी संस्था की सदस्यता जरूर ग्रहण करें। जिसके तहत आपको 1000 प्रति वर्ष अग्रिम शुल्क जमा करना होगा। जिसके एवज में हम आपको हर महीने का अंक आप तक घर पहुंचा कर देंगे और आपकी खबरें भी इसमें प्रमुखता से प्रकाशित की जाएगी। बालोद जिले के अन्य बड़े-बड़े क्षेत्र में भी संवाददाता नियुक्त किए जाने हैं।

दर्शन बालोद न्यूज के शुभारंभ एवं पर्यावरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जयंत किरी

समाजसेवी गुरुर, जिला बालोद

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक शुभारंभ पर

माधुरी दीपक यादव जी

को

हार्दिक बधाई

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका योगदान सराहनीय है।

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

अरुण साहू

अध्यक्ष,

भाजपा मंडल जुंगेरा (जगन्नाथपुर)

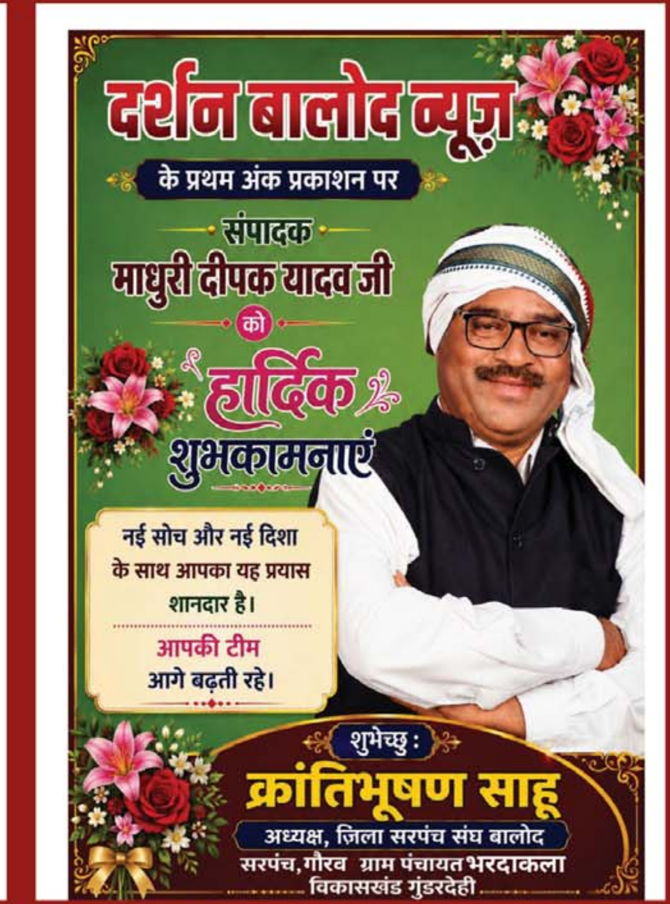

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक प्रकाशन पर

संपादक

माधुरी दीपक यादव जी

को

हार्दिक शुभकामनाएं

नई सोच और नई दिशा के साथ आपका यह प्रयास शानदार है।

आपकी टीम आगे बढ़ती रहे।

शुभेच्छु :

क्रांतिभूषण साहू

अध्यक्ष, ज़िला सरपंच संघ बालोद

सरपंच,गौरव ग्राम पंचायत भरदाकला

विकासखंड गुंडरदेही

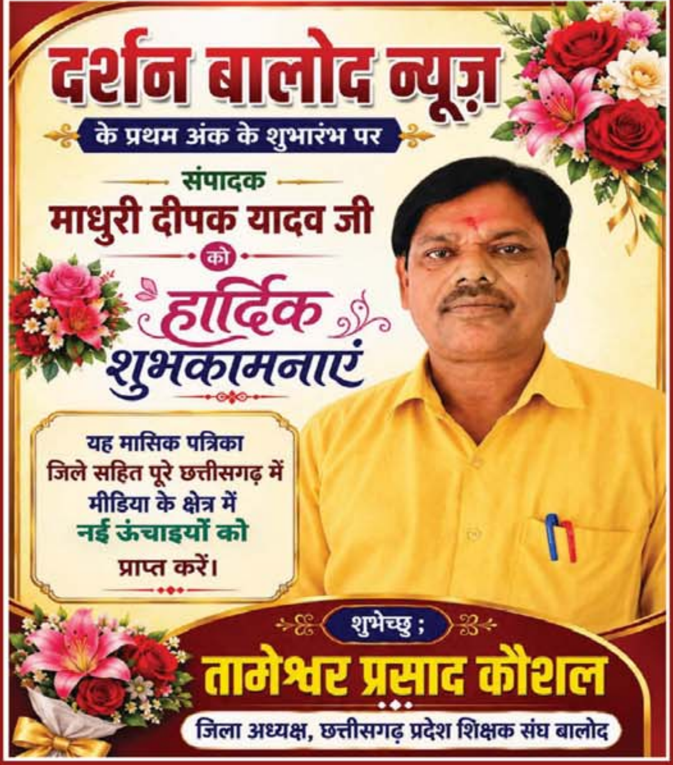

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक के शुभारंभ पर

संपादक

माधुरी दीपक यादव जी

को

हार्दिक शुभकामनाएं

यह मासिक पत्रिका जिले सहित पूरे छत्तीसगढ़ में मीडिया के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करें।

शुभेच्छु ;

तामेश्वर प्रसाद कौशल

जिला अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक संघ बालोद

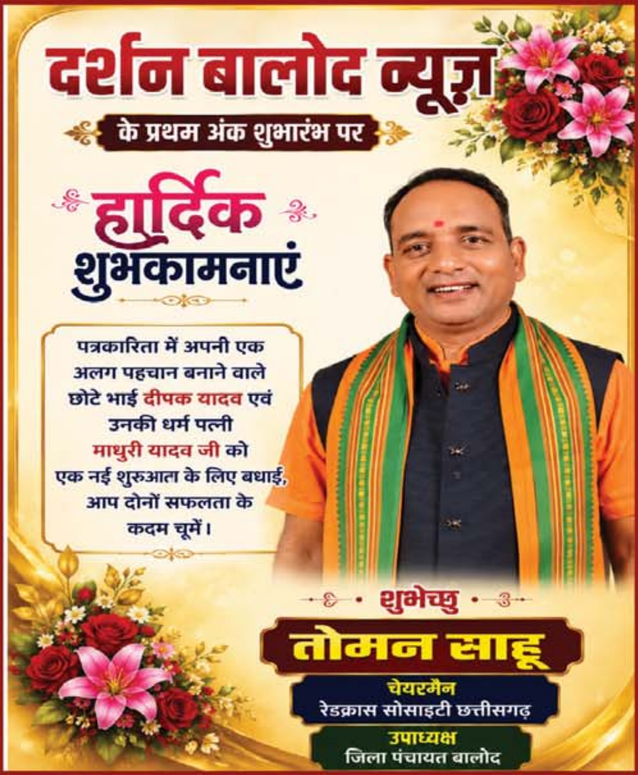

दर्शन बालोद न्यूज़

के प्रथम अंक शुभारंभ पर

हार्दिक शुभकामनाएं

पत्रकारिता में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले छोटे भाई दीपक यादव एवं उनकी धर्म पत्नी माधुरी यादव जी को एक नई शुरुआत के लिए बधाई, आप दोनों सफलता के कदम चूमें।

शुभेच्छु

तोमन साहू

चेयरमैन

रेडक्रास सोसाइटी छत्तीसगढ़

उपाध्यक्ष

जिला पंचायत बालोद

“टीचर की एक बात ने बदल दी जिंदगी”: दुबले-पतले छात्र से फिटनेस आइकॉन बने सनी जायसवाल, अब युवाओं को दे रहे नशामुक्ति का संदेश

जिम ट्रेनर से किसान और फिर इंटक जिला अध्यक्ष तक का संघर्षपूर्ण सफर, युवाओं से बोले– फिटनेस अपनाओ, नशे से दूर रहो

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

कभी स्कूल में एक टीचर की कही गई बात दिल पर लगी और उसी ने एक छात्र की जिंदगी की दिशा बदल दी। आज वही छात्र फिटनेस की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाकर युवाओं को नशे से दूर रहने और स्वस्थ जीवन अपनाने की प्रेरणा दे रहा है। हम बात कर रहे हैं बालोद जिले के दल्लीराजहरा निवासी पूर्व बॉडीबिल्डर एवं वर्तमान इंटक कांग्रेस बालोद जिला अध्यक्ष सनी जायसवाल की, जिनकी संघर्ष और सफलता की कहानी युवाओं के लिए प्रेरणा बनती जा रही है।

“मेरी हर सफलता के पीछे पत्नी का सबसे बड़ा योगदान”

सनी जायसवाल अपनी सफलता का श्रेय अपनी पत्नी पूजा जायसवाल को भी देते हैं। उन्होंने कहा कि संघर्ष के हर दौर में उनकी पत्नी ने उनका साथ दिया और हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

“तुम पहले ज्यादा अच्छे दिखते थे” और वहीं से शुरू हुआ सफर

सनी जायसवाल बताते हैं कि कक्षा 12वीं में उनकी इंग्लिश टीचर ने उनसे कहा था— “तुम 11वीं में ज्यादा अच्छे दिखते थे, अभी बहुत पतले-दुबले लग रहे हो।” बस यही बात उनके दिल में उतर गई। वर्ष 2008 में उन्होंने सिर्फ शरीर को बेहतर बनाने के लिए जिम जाना शुरू किया, लेकिन धीरे-धीरे वही शौक फिटनेस के जुनून में बदल गया।

कॉलेज छोड़ा, जिम ट्रेनर बने फिर खोला अपना जिम

फिटनेस के प्रति बढ़ते जुनून के चलते उन्होंने कॉलेज बीच में छोड़ दिया और रायपुर में जिम ट्रेनर के रूप में काम शुरू किया। मेहनत और लगन के दम पर बाद में उन्होंने खुद का जिम भी शुरू किया, जिसका उद्घाटन भिलाई विधायक देवेंद्र यादव द्वारा किया गया था।

कोरोना में बर्बाद हुआ जिम, फिर खेती से बनाई नई पहचान

कोरोना काल में उनका जिम पूरी तरह प्रभावित हो गया और जिंदगी एक बार फिर शून्य पर आ गई। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने खेती-किसानी की ओर कदम बढ़ाया और मेहनत के दम पर फार्मिंग के क्षेत्र में भी अपनी नई पहचान स्थापित की। उनका मानना है कि जीवन में संघर्ष कभी खत्म नहीं होते, लेकिन मेहनत करने वाला व्यक्ति हर बार नई शुरुआत कर सकता है।

फिटनेस आइकॉन के रूप में मिली पहचान

सनी जायसवाल को फिटनेस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजस्थान, दिल्ली और रायपुर में कई मंचों पर सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2016 में उन्होंने करोड़ों युवाओं के फिटनेस आइकॉन और बॉलीवुड अभिनेता साहिल खान को छत्तीसगढ़ बुलाकर उनका स्वागत भी किया था। इसके अलावा WWE चैंपियन द ग्रेट खली द्वारा भी रायपुर में आयोजित बॉडीबिल्डिंग कार्यक्रम में उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

नशे के खिलाफ युवाओं को दे रहे सकारात्मक संदेश

सनी जायसवाल ने प्रदेश में बढ़ती

नशाखोरी पर चिंता जताते हुए कहा कि युवा यदि फिटनेस और खेल को अपनाएं तो वे गलत रास्तों से दूर रह सकते हैं। उन्होंने कहा— "नशा शरीर और भविष्य दोनों को बर्बाद करता है, जबकि फिटनेस व्यक्ति को आत्मविश्वासी, अनुशासित और सकारात्मक बनाती है।" उन्होंने युवाओं से सप्ताह में कम से कम तीन दिन अपने शरीर और स्वास्थ्य के लिए समय निकालने की अपील की।

गांव-गांव में जिम खोलने की कही बात

उन्होंने कहा कि यदि भविष्य में उनकी सरकार बनती है तो गांव, पंचायत, ब्लॉक और नगर पालिका स्तर पर युवाओं के लिए जिम खोलने की दिशा में कार्य किया जाएगा, ताकि युवा नशे से दूर रहकर खेल और फिटनेस की ओर आगे बढ़ें।

राजनीति में भी संघर्ष से बनाई पहचान

सनी जायसवाल वर्ष 2014 से कांग्रेस और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के संघर्षकाल से राजनीति से जुड़े हुए हैं। लगातार सक्रियता और मेहनत के दम पर आज वे बालोद जिला इंटक कांग्रेस अध्यक्ष के पद तक पहुंचे हैं।

संघर्ष से सफलता तक की प्रेरणादायक कहानी

सनी जायसवाल की कहानी यह बताती है कि जिंदगी में परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, मेहनत, अनुशासन और सकारात्मक सोच इंसान को हर मुश्किल से बाहर निकाल सकती है। आज वे फिटनेस, खेती, समाजसेवा और राजनीति— चारों क्षेत्रों में सक्रिय रहकर युवाओं के लिए प्रेरणा का उदाहरण बनते जा रहे हैं।

जमीनी नेतृत्व से जनसेवक की पहचान बना रहे क्रांति भूषण साहू, सरपंचों की आवाज बनकर उभरे जिला सरपंच संघ अध्यक्ष

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

बालोद जिला सरपंच संघ के अध्यक्ष एवं ग्राम पंचायत भरदाकला के सरपंच क्रांति भूषण साहू इन दिनों जिलेभर के पंचायत प्रतिनिधियों और ग्रामीणों के बीच एक सक्रिय जनसेवक के रूप में तेजी से अपनी पहचान बना रहे हैं। सरपंचों की समस्याओं के समाधान से लेकर ग्रामीण विकास कार्यों तक वे लगातार सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। पंचायतों से जुड़े विभिन्न मुद्दों और विकास कार्यों में आ रही समस्याओं को लेकर वे निरंतर कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ, जनपद पंचायत सीईओ सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से मुलाकात कर समाधान की मांग कर रहे हैं।

सरपंचों और प्रशासन के बीच मजबूत कड़ी-जिला सरपंच संघ की कमान संभालने के बाद क्रांति भूषण साहू ने पंचायत प्रतिनिधियों की आवाज को मजबूती से उठाना शुरू किया है। जिले के विभिन्न गांवों के सरपंच अपनी समस्याएं और मांगें उनके माध्यम से प्रशासन तक पहुंचा रहे हैं। उनका मानना है कि पंचायतें ग्रामीण विकास की रीढ़ हैं और यदि सरपंचों को पर्याप्त सहयोग और अधिकार मिलें, तो गांवों का तेजी से विकास संभव है।

हर मुद्दे पर सक्रिय भूमिका-ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, पानी, बिजली, पंचायत फंड, निर्माण कार्य, राजस्व एवं जनसमस्याओं जैसे विषयों पर वे लगातार सक्रिय हैं। पंचायत प्रतिनिधियों के अधिकारों और सम्मान को लेकर भी वे मुखरता से अपनी बात रखते हैं।

गांव-गांव पहुंचकर सुन रहे समस्याएं-क्रांति भूषण साहू अब केवल संगठन पदाधिकारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एक सक्रिय जनसेवक के रूप में भी अपनी पहचान बना रहे हैं। वे गांव-गांव पहुंचकर लोगों की समस्याएं सुनते हैं और उनके समाधान के लिए प्रशासन तक आवाज पहुंचाते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि वे हर समय लोगों के बीच उपलब्ध रहते हैं और समस्याओं के समाधान के लिए तत्परता से प्रयास करते हैं।

युवाओं और पंचायत प्रतिनिधियों में बढ़ा विश्वास-उनकी सक्रियता से युवाओं और पंचायत प्रतिनिधियों में भी नया विश्वास देखने को मिल रहा है। ग्रामीण विकास और पंचायत सशक्तिकरण को लेकर उनकी पहल से क्षेत्र में सकारात्मक माहौल बन रहा है।

जनसेवा को बताया प्राथमिकता

क्रांति भूषण साहू का कहना है कि जनप्रतिनिधि का सबसे बड़ा दायित्व जनता की समस्याओं को समझकर उनका समाधान कराना है। उन्होंने कहा कि वे भविष्य में भी पंचायतों और ग्रामीणों की आवाज बनकर लगातार कार्य करते रहेंगे।

“जीतकर क्या कर लेगी?” ताने को बनाया ताकत, अब विकास और जनसेवा की पहचान बन रहीं दमयंती सुभाष हरदेल

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

कभी चुनाव के दौरान लोगों के ताने सुनने वाली जगन्नाथपुर क्षेत्र की जनपद सदस्य एवं जल जतन एवं स्वच्छता समिति की सभापति श्रीमती दमयंती सुभाष हरदेल आज अपने कार्यों के दम पर क्षेत्र में एक सक्रिय, संवेदनशील और जमीनी जनप्रतिनिधि के रूप में मजबूत पहचान बना चुकी हैं। ग्रामीण समस्याओं को शासन-प्रशासन तक पहुंचाना हो या विकास कार्यों को धरातल पर लाना, दमयंती हरदेल लगातार सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यही वजह है कि आज क्षेत्र के लोग उन्हें एक भरोसेमंद जनसेवक के रूप में देख रहे हैं।

तानों को चुनौती बनाकर आगे बढ़ीं

एक बातचीत में दमयंती हरदेल ने बताया कि चुनाव के दौरान कुछ लोगों ने कहा था—

“जीत भी जाओगी तो क्या कर लोगी?”

लेकिन उन्होंने इस बात को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि चुनौती बनाया और लगातार जनहित के कार्यों में जुट गईं। आज वही लोग उनके कार्यों की सराहना कर रहे हैं।

क्षेत्र में विकास कार्यों की मिल रही सौगात

उनके प्रयासों से जनपद क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण विकास कार्यों को स्वीकृति मिली है। कई कार्यों का भूमिपूजन हो चुका है तो कई जगह निर्माण कार्य शुरू हो गया है।

उनके प्रयास से क्षेत्र में

- **दरबारी नवागांव में मंच हेतु टीन शेड निर्माण**
- **परसदा के छोटे पारा में पक्की नाली निर्माण**
- **बाजार क्षेत्र में मंच निर्माण**
- **बड़े पारा परसदा में 20 लाख रुपए का अटल समरसता भवन**
- **दरबारी नवागांव में मिडिल स्कूल भवन निर्माण**
- **जैसे महत्वपूर्ण कार्य होने जा रहे हैं।**

सड़क, शिक्षा और जनसमस्याओं को लेकर लगातार मुखर

पूर्व में उनके प्रयास से जगन्नाथपुर से दरबारी नवागांव मार्ग चौड़ीकरण कार्य शुरू हो चुका है। वहीं हायर सेकेंडरी स्कूल भवन निर्माण भी प्रगति पर है।

इसके अलावा वे लगातार

- जगन्नाथपुर से परसदा पापरा मार्ग निर्माण
- परसदा से दरबारी नवागांव मार्ग सुधार
- जगन्नाथपुर में शासकीय महाविद्यालय की स्थापना
- जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर शासन-प्रशासन से पत्राचार कर रही हैं।
- हाल ही में आयोजित सुशासन तिहार में भी उन्होंने अपने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं और मांगों को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने ग्रामीणों की मूलभूत सुविधाओं, सड़क, शिक्षा और विकास कार्यों से जुड़े आवेदन प्रशासन को सौंपते हुए शीघ्र समाधान की मांग की।

जनसेवा में पति का भी मिल रहा साथ

उनके पति सुभाष हरदेल, जो चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े हैं और समाजसेवा में भी सक्रिय हैं, दोनों मिलकर क्षेत्र में जनसेवा के कार्य कर रहे हैं। गांव की छोटी समस्याओं से लेकर बड़े विकास कार्यों तक यह दंपति लगातार लोगों के बीच सक्रिय रहता है।

ग्रामीणों के बीच बढ़ा विश्वास

ग्रामीणों का कहना है कि दमयंती हरदेल केवल आश्वासन नहीं देतीं, बल्कि समस्याओं के समाधान के लिए लगातार फॉलोअप भी करती हैं। यही कारण है कि आज क्षेत्र में उनकी एक मजबूत और सकारात्मक छवि बन चुकी है।

महिला नेतृत्व की बन रहीं प्रेरणा

दमयंती सुभाष हरदेल आज इस बात का उदाहरण बन रही हैं कि यदि इच्छाशक्ति मजबूत हो तो महिलाएं भी जनप्रतिनिधित्व के माध्यम से क्षेत्र की तस्वीर बदल सकती हैं। उनका संघर्ष और सक्रियता अब कई महिलाओं के लिए प्रेरणा बनती जा रही है।

NARZO 70x 5G
Namdev sahu 2026.04.21 19:13

विकास कार्यों का भूमिपूजन करती जनपद सदस्य दमयंती हरदेल

चरवाहे के बेटे खेरथाडीह के देव (आनंद) यादव कई गांवो के बच्चों का संवार रहें है भविष्य

कठिन परिस्थितियों में पूरी की पढ़ाई

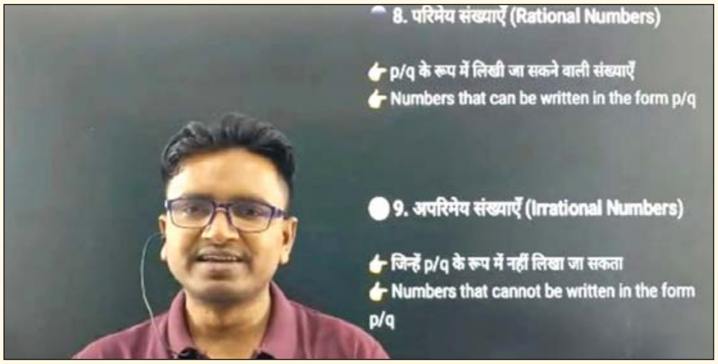
8. परिमेय संख्याएँ (Rational Numbers)

- p/q के रूप में लिखी जा सकने वाली संख्याएँ
- Numbers that can be written in the form p/q

9. अपरिमेय संख्याएँ (Irrational Numbers)

- जिन्हें p/q के रूप में नहीं लिखा जा सकता
- Numbers that cannot be written in the form p/q

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

कहते हैं कि मेहनत और लगन से हर मुश्किल को पार किया जा सकता है। इसी कहावत को सच कर दिखाया है देव यादव सर ने, जो आज ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। छग के बालोद जिले के बालोद ब्लॉक के ग्राम खेरथाडीह की निवासी देव आनंद यादव (देव यादव) एक साधारण चरवाहा परिवार से आते हैं। बचपन में आर्थिक तंगी और संघर्षों के बीच उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की। गाय चराने वाले परिवार से निकलकर उन्होंने कठिन परिस्थितियों में अपनी हायर एजुकेशन पूरी की और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई।

केंद्रीय विद्यालय में दी सेवाएं-लगातार मेहनत और लगन के दम पर देव यादव को देश के प्रतिष्ठित केंद्रीय विद्यालय संगठन में संविदा शिक्षक के रूप में करीब 5 वर्षों तक कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान उन्होंने शिक्षा के महत्व को करीब से समझा और ग्रामीण बच्चों के लिए कुछ बेहतर करने का संकल्प लिया।

कोरोना काल में शुरू की ऑनलाइन क्लास-कोरोना महामारी के दौरान गांवों में बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही थी। ऐसे समय में देव यादव ने गांव के बच्चों को पढ़ाई से जोड़ने के उद्देश्य से ऑनलाइन क्लास की शुरुआत की। उनका उद्देश्य सिर्फ पढ़ाना नहीं, बल्कि ग्रामीण बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार कर उनके सपनों को उड़ान देना था।

गरीब प्रतिभाशाली बच्चों के लिए निशुल्क पहल-देव यादव हर वर्ष आर्थिक रूप से कमजोर 20 प्रतिभाशाली बच्चों को निशुल्क कोचिंग भी उपलब्ध कराते हैं। उनका मानना है कि किसी भी बच्चे की प्रतिभा आर्थिक अभाव के कारण पीछे नहीं रहनी चाहिए।

नवोदय से स्पोकन इंग्लिश तक की तैयारी-वर्तमान में देव यादव बेहद कम शुल्क में बच्चों को जवाहर नवोदय विद्यालय, प्रयास विद्यालय, एकलव्य विद्यालय प्रवेश परीक्षा और स्पोकन इंग्लिश की तैयारी करवा रहे हैं। उनकी क्लास से जुड़कर ग्रामीण क्षेत्र के कई बच्चे आज प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

सैकड़ों बच्चों के भविष्य को मिल रही नई दिशा-आज सैकड़ों विद्यार्थी देव यादव की ऑनलाइन क्लास से जुड़कर अपने भविष्य को संवार रहे हैं। शिक्षा के प्रति उनकी मेहनत और समर्पण की क्षेत्रभर में सराहना हो रही है।

"गांव का बच्चा भी बड़ा मुकाम हासिल करे"-देव यादव का सपना है कि गांव के बच्चे भी बड़े संस्थानों में चयनित होकर अपने गांव, क्षेत्र और देश का नाम रोशन करें। उनकी यह पहल आज ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है।

उनसे यहां कर सकते हैं संपर्क-यूट्यूब चैनल का नाम - देव यादव ऑनलाइन क्लासेस Mobile App- Dev yadav online Classes,Website - devyadavonlineclasses.teachmint.in

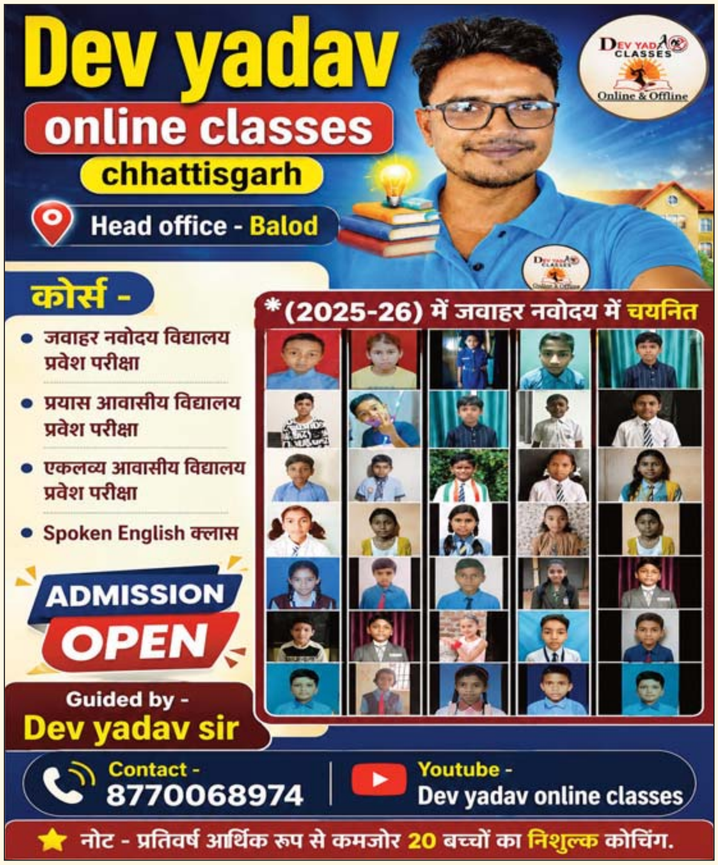
Dev yadav
online classes
chhattisgarh
Head office - Balod

कोर्स -
- जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा
- प्रयास आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा
- एकलव्य आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा
- Spoken English क्लास

ADMISSION OPEN

*(2025-26) में जवाहर नवोदय में चयनित

Guided by -
Dev yadav sir

Contact - 8770068974
Youtube - Dev yadav online classes

★ नोट - प्रतिवर्ष आर्थिक रूप से कमजोर 20 बच्चों का निशुल्क कोचिंग.

DEV YADAV CLASSES
Online & Offline

यादव समाज की तीन बेटियां बनी प्रेरणा की मिसाल : शिक्षा में दो प्राचार्य और एक व्याख्याता वर्षों से शिक्षा के साथ समाजसेवा में सक्रिय

हर वर्ष पिता की पुण्यस्मृति में करती हैं सेवा का अनोखा आयोजन

श्रीमती कादम्बिनी यादव
व्याख्याता बड़गाँव

श्रीमती विनोदनी यादव
प्राचार्य कन्वोड़ा

श्रीमती दुर्गेशनंदिनी
यादवप्राचार्य दुधली

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

जिस दौर में बेटियों की पढ़ाई को समाज में ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था, उस समय एक पिता ने तमाम विरोधों के बीच अपनी बेटियों को शिक्षा दिलाने का साहस किया। आज वही बेटियां शिक्षा विभाग में ऊंचे पदों पर पहुंचकर अपने पिता के सपनों को नई ऊंचाई दे रही हैं। यादव समाज की तीनों बेटियां आज शिक्षा, संस्कार और समाजसेवा की प्रेरणादायक मिसाल बन चुकी हैं। बड़ी बहन दुर्गेश नंदिनी यादव शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुधली में प्राचार्य के पद पर पदस्थ हैं। मंझली बहन विनोदिनी यादव शासकीय विद्यालय कन्नेवाड़ा में प्राचार्य हैं, जबकि छोटी बहन कादंबिनी यादव शासकीय विद्यालय बड़गांव में व्याख्याता के रूप में सेवाएं दे रही हैं। तीनों बहनों ने वर्षों की मेहनत, अनुशासन और समर्पण के बल पर शिक्षा क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है।

> **1980 में बेटियों को पढ़ाने के लिए समाज से लड़े पिता, आज वही तीन बेटियां शिक्षा और समाजसेवा की बन गईं मिसाल**

पिता के संघर्ष और सोच ने बदली बेटियों की जिंदगी

तीनों बहनों के प्रेरणास्त्रोत उनके पिता स्वर्गीय एल.पी. यादव (सेवानिवृत्त प्राचार्य) रहे, जिन्होंने वर्ष 1980 के दौर में समाज की परंपरागत सोच के खिलाफ जाकर अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा दिलाई। उस समय बालिका शिक्षा बेहद सीमित थी और लड़कियों का गणित संकाय में पढ़ना बहुत दुर्लभ माना जाता था। बावजूद इसके उन्होंने अपनी बेटियों को जिले के आदर्श बालक स्कूल में विशेष अनुमति लेकर पढ़ाया। उस बैच में केवल 2-3 बालिकाएं ही थीं, जो लड़कों के साथ पढ़ाई करती थीं। आज उनकी वही सोच और दूरदृष्टि बेटियों की सफलता के रूप में पूरे समाज के सामने मिसाल बन चुकी है।

हर वर्ष पिता की पुण्यस्मृति में करती हैं सेवा का अलग आयोजन

तीनों बहनें अपने पिता की स्मृति को केवल श्रद्धांजलि तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि हर वर्ष समाजसेवा का एक नया आयोजन कर उनकी सीख को आगे बढ़ाती हैं।

इस वर्ष पिता स्वर्गीय एल.पी. यादव की 11वीं पुण्यस्मृति पर घरौंदा आश्रय गृह बालोद, सिवनी और मूक-बधिर शाला उमरादाह में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ समय बिताकर उन्हें भोजन कराया गया।उन्होंने कहा कि इन बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाना ही उनके पिता को सच्ची श्रद्धांजलि है। साथ ही उन्होंने समाज से अपील की कि लोग ऐसे बच्चों के साथ समय बिताएं, क्योंकि उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत स्नेह और

स्व. श्रद्धेय श्री एल. पी. यादव जी
सेवानिवृत्त प्राचार्य

स्व.श्रद्धेय श्री कमोद यादव जी
सेवानिवृत्त शिक्षक

स्व .श्रद्धेय श्री लोकेंद्र यादव जी
शिक्षक एवं भूतपूर्व विधायक

अपनापन की होती है।

कादंबिनी यादव समाजसेवा, रक्तदान और महिला नेतृत्व में सक्रिय

छोटी बहन कादंबिनी यादव शिक्षा के साथ-साथ समाजसेवा में भी लगातार सक्रिय हैं। वे नियमित रूप से ब्लड डोनेशन करती हैं और जरूरतमंदों की सहायता के लिए हमेशा आगे रहती हैं। उन्होंने महिलाओं को संगठित भी किया है, जिसके माध्यम से महिलाओं को नेतृत्व, सामाजिक जागरूकता और सेवा कार्यों से जोड़ा जा रहा है। वे विभिन्न सामाजिक गतिविधियों और जनजागरूकता अभियानों में भी सक्रिय भूमिका निभा रही है।

कादंबिनी यादव ने पूर्व विधायक स्वर्गीय लोकेंद्र यादव (पूर्व विधायक एवं शिक्षक) बड़े भाई की समाजसेवा और मानवीय विचारों से प्रेरित होकर देहदान का संकल्प लिया है। उन्होंने देहदान का घोषणा पत्र भरकर समाज को मानव सेवा का बड़ा संदेश भी दिया है।

उनका मानना है कि मृत्यु के बाद भी मानव शरीर किसी जरूरतमंद या चिकित्सा शिक्षा के काम आ सके, इससे बड़ा सेवा कार्य कोई नहीं हो सकता।

पुण्यस्मृति में हर वर्ष किए अनोखे सेवा कार्य

- **पिछले वर्षों में भी तीनों बहनों द्वारा कई सामाजिक कार्य किए गए, जिनमें—**
- **मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान**
- **गरीब बच्चों को स्वेटर, जूते-मोजे, स्कूल बैग वितरण**
- **वृद्धाश्रम में अनाज, साड़ी, कंबल वितरण**
- **दिव्यांग संस्थानों में सहयोग**
- **न्यौता भोज आयोजन**
- **सफाई दीदियों का सम्मान**
- **घरौंदा आश्रय गृह में कूलर दान**
- **जैसे कई प्रेरणादायक कार्य शामिल हैं।**

शिक्षा के साथ संस्कार और

समाजसेवा का संदेश

तीनों बहनें अपने-अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और समाजसेवा के संस्कार भी दे रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि इनका पूरा परिवार शिक्षा और सेवा की भावना का जीवंत उदाहरण है।

आज भी लोगों की स्मृतियों में जीवित हैं एल.पी. यादव

परिवारजनों के अनुसार स्वर्गीय एल.पी. यादव केवल अपनी बेटियों की शिक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि समाज में शिक्षा के प्रसार के लिए भी हमेशा सक्रिय रहे। उनके विद्यार्थी आज भी उन्हें याद करते हैं। उनकी बेटियों का मानना है कि आज वे जो कुछ भी हैं, वह केवल अपने पिता के संघर्ष, सोच और संस्कारों की वजह से हैं।

बेटियां बोझ नहीं, बदलाव की ताकत हैं

यादव समाज की इन तीनों बेटियों की कहानी यह साबित करती है कि यदि परिवार बेटियों को अवसर और विश्वास दे, तो वे न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समाज का नाम रोशन कर सकती हैं। शिक्षा, संस्कार और सेवा का यह संगम आज पूरे जिले के लिए प्रेरणा बन चुका है।

डुआ से जगन्नाथपुर बनने की रहस्यमयी कहानी: 11वीं शताब्दी का शिव मंदिर और 33 फीट महादेव प्रतिमा बनेंगे नई पहचान

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के आयोजन के बाद फिर चर्चा में आया ऐतिहासिक शिवधाम

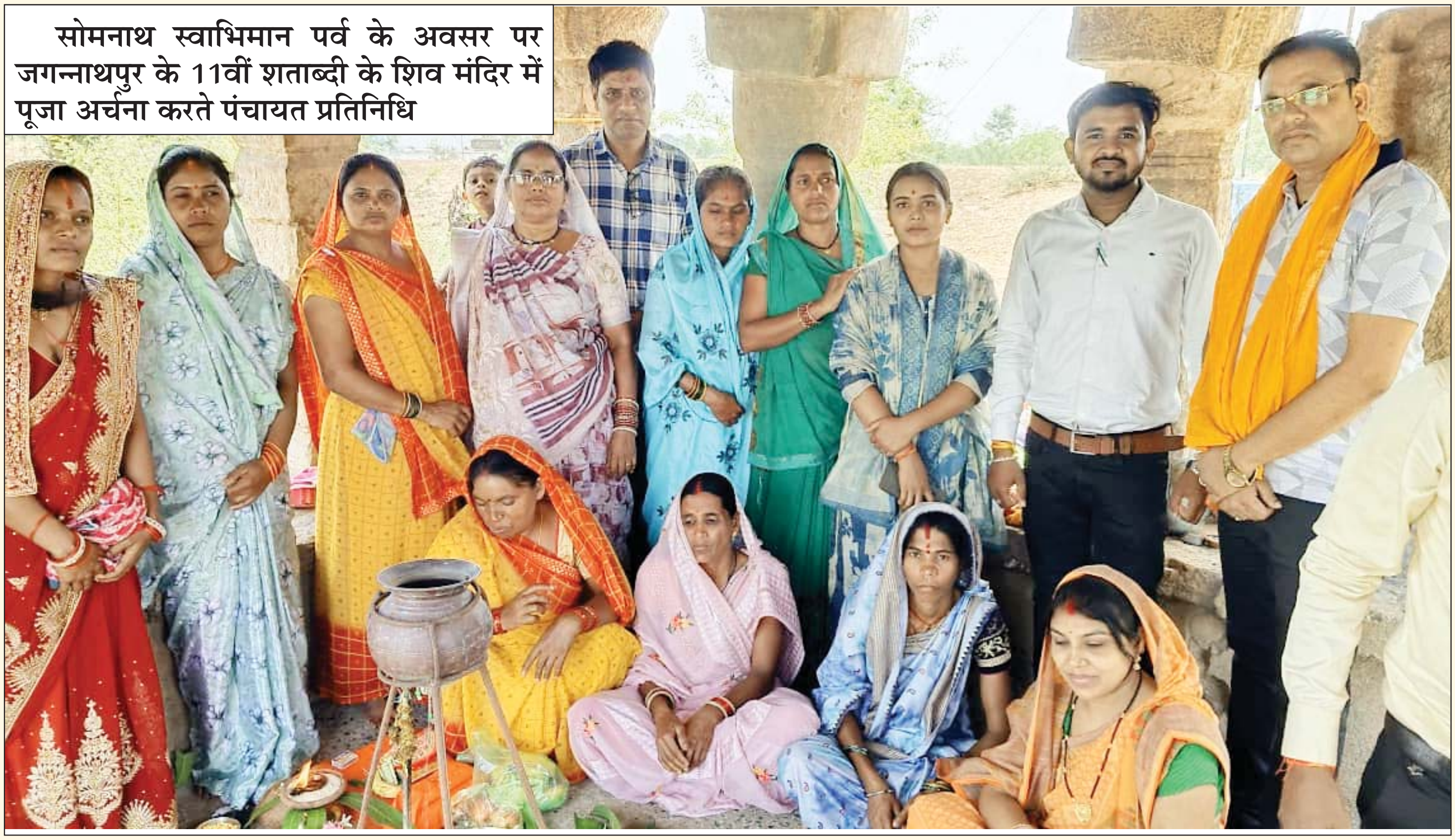
सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर जगन्नाथपुर के 11वीं शताब्दी के शिव मंदिर में पूजा अर्चना करते पंचायत प्रतिनिधि

बालोद ।। अरुण साहू की रिपोर्ट

बालोद-अर्जुन्दा मार्ग पर स्थित ग्राम जगन्नाथपुर इन दिनों अपने 11वीं शताब्दी के प्राचीन शिव मंदिर, रहस्यमयी लोककथाओं और निर्माणाधीन 33 फीट ऊंची भगवान महादेव की विशाल प्रतिमा को लेकर सुर्खियों में है। हाल ही में यहां आयोजित "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" के बाद यह ऐतिहासिक स्थल एक बार फिर लोगों के आकर्षण का केंद्र बन गया है। ग्रामीणों का मानना है कि यदि जिला प्रशासन और पर्यटन विभाग इस दिशा में पहल करे, तो आने वाले समय में जगन्नाथपुर बालोद जिले का प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल बन सकता है।

33 फीट ऊंची महादेव प्रतिमा बनेगी श्रद्धा का नया प्रतीक-पूर्व सरपंच एवं भाजपा मंडल जुंगेरा अध्यक्ष अरुण साहू के प्रयासों से प्राचीन मंदिर परिसर और जलाशय तट के आसपास सौंदर्यीकरण कार्य तेजी से जारी है। यहां 33 फीट ऊंची भगवान महादेव की भव्य प्रतिमा का निर्माण किया जा रहा है, जो आने वाले समय में इस क्षेत्र की नई पहचान बनने वाली है। अरुण साहू ने बताया कि ग्रामीणों, दानदाताओं और स्वयं के सहयोग से अब तक लगभग 9 लाख रुपए खर्च किए जा चुके हैं। अनुमान है कि अगले तीन-चार महीनों में प्रतिमा निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि शासन और प्रशासन स्तर से सहयोग मिले तो यह स्थान राज्य स्तरीय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है।

11वीं शताब्दी का संरक्षित ऐतिहासिक शिव मंदिर

ग्राम जगन्नाथपुर का यह शिव मंदिर लगभग 11वीं शताब्दी का माना जाता है और यह पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित है। तालाब किनारे स्थित यह मंदिर अपनी प्राचीन स्थापत्य कला, नक्काशीदार

रहस्यमयी कहानी: डुआ से कैसे बना जगन्नाथपुर?

स्थानीय बुजुर्गों और ग्रामीणों के अनुसार, प्राचीन काल में जगदलपुर के राजा-रानी ओडिशा स्थित पुरी जगन्नाथ धाम की यात्रा से लौटते समय इस गांव में विश्राम के लिए रुके थे। उस समय गांव का नाम "डुआ" हुआ करता था। कहा जाता है कि गांव का शांत वातावरण, धार्मिक माहौल और प्राकृतिक सुंदरता देखकर राजा-रानी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने यहां दो मंदिरों का निर्माण कराया। साथ ही गांव का नाम बदलकर "जगन्नाथपुर" रख दिया। समय के साथ एक मंदिर क्षतिग्रस्त होकर नष्ट हो गया, जबकि दूसरा मंदिर आज भी अपनी ऐतिहासिक पहचान के साथ मौजूद है।

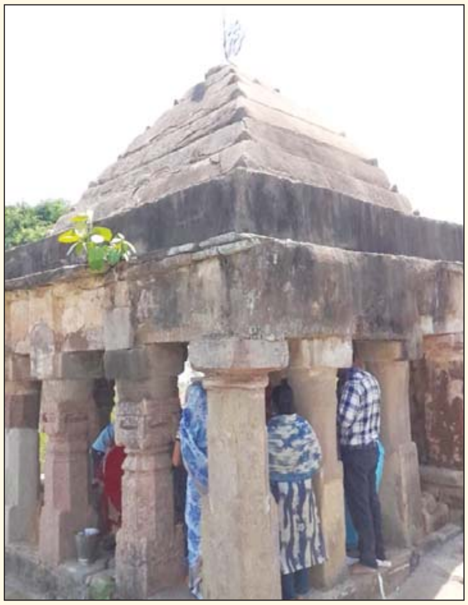

पत्थरों और धार्मिक महत्व के कारण अलग पहचान रखता है। मंदिर में भगवान शिव का प्राचीन शिवलिंग और भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित है। मंदिर के ऊपर बना विष्णु चक्र आकार का गुंबद इसकी विशेषता माना जाता है।

नाग-नागिन और सुदर्शन पत्थर की अनोखी लोककथाएं

मंदिर परिसर से जुड़ी कई रहस्यमयी लोककथाएं आज भी ग्रामीणों के बीच प्रचलित हैं। लोगों का मानना है कि मंदिर परिसर में आज भी नाग-नागिन का जोड़ा विचरण करता है। वहीं मंदिर में रखे सुदर्शन चक्र आकार के पत्थरों को लेकर भी रोचक कहानियां सुनाई जाती हैं। ग्रामीणों के अनुसार, पहले एक विशेष पत्थर पर बैठकर स्नान करने वाला व्यक्ति तालाब के बीच तक पहुंच जाता था और पत्थर फिर अपने स्थान पर लौट आता था। हालांकि वर्तमान में इसे केवल लोककथा माना जाता है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व से बढ़ी पहचान

हाल ही में यहां "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" का आयोजन भी किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। आयोजन के बाद इस ऐतिहासिक स्थल की चर्चा जिलेभर में होने लगी है।

महाशिवरात्रि में उमड़ती है श्रद्धालुओं की भारी भीड़

महाशिवरात्रि के अवसर पर यहां विशेष पूजा-अर्चना और धार्मिक आयोजन होते हैं। नवविवाहित दंपति भी सुखमय दांपत्य जीवन की कामना लेकर यहां विशेष पूजा करने पहुंचते हैं। श्रद्धालुओं के लिए खीर-पूड़ी प्रसाद वितरण की परंपरा भी वर्षों से चली आ रही है।

ग्रामीणों की मांग— प्रशासन करे संरक्षण और विकास

ग्रामीणों और पंचायत प्रतिनिधियों का कहना है कि पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित घोषित होने के बावजूद मंदिर के संरक्षण और विकास के लिए अब तक कोई ठोस पहल नहीं हुई है। मंदिर और आसपास का अधिकांश सौंदर्यीकरण ग्राम पंचायत, ग्रामीणों और दानदाताओं के सहयोग से किया जा रहा है। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि यहां सड़क, प्रकाश व्यवस्था, पर्यटन सुविधाएं और सौंदर्यीकरण कार्य कर इस ऐतिहासिक धरोहर को धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जाए।

26 बार रक्तदान, नेत्रदान और देहदान का संकल्प: शिक्षक लाल रघुवीर सिंह ठाकुर बने मानव सेवा की मिसाल

हर तीन महीने में करते हैं रक्तदान, रेडक्रॉस ने 'रक्तवीर सम्मान' से किया सम्मानित

शाखा - बालोद
11 मई 2026
स्थान

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

आज के दौर में जहां लोग अपने लिए समय निकालना मुश्किल समझते हैं, वहीं बालोद जिले के ग्राम देवारभाट निवासी शिक्षक एवं समाजसेवी लाल रघुवीर सिंह ठाकुर मानव सेवा की ऐसी मिसाल बन चुके हैं, जो समाज को प्रेरणा देने का काम कर रही है। लगातार 26 बार रक्तदान कर चुके लाल रघुवीर सिंह ठाकुर को इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा "रक्तवीर सम्मान" से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी छत्तीसगढ़ के चेयरमेन श्री तोमन साहू के हाथों प्रदान किया गया।

हर तीन माह में करते हैं रक्तदान-लाल रघुवीर सिंह ठाकुर वर्ष 2017 से लगातार हर तीन माह में रक्तदान करते आ रहे हैं। उनका मानना है कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं, क्योंकि इससे किसी जरूरतमंद को नया जीवन मिल सकता है। उनके इस सेवा भाव के कारण क्षेत्र में लोग उन्हें प्रेरणास्रोत के रूप में देखते हैं। युवाओं को भी वे नियमित रूप से रक्तदान के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

रक्तदान तक नहीं रुकी सेवा, नेत्रदान और देहदान का भी लिया संकल्प-मानव सेवा के प्रति उनकी सोच केवल रक्तदान तक सीमित नहीं रही। मार्च 2022 में उन्होंने नेत्रदान के लिए पंजीयन कराया और देहदान का संकल्प पत्र भी मेडिकल कॉलेज रायपुर को भेजा। उनका कहना है कि जीवन के बाद भी यदि शरीर किसी के काम आ सके तो इससे बड़ा सौभाग्य कुछ नहीं हो सकता।

विश्व रेडक्रॉस दिवस पर हुआ सम्मान-इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी शाखा बालोद द्वारा विगत 11 मई 2026 को विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसी कार्यक्रम में लाल रघुवीर सिंह ठाकुर को "रक्तवीर सम्मान" से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी छत्तीसगढ़ के चेयरमेन श्री तोमन साहू, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. प्रदीप जैन (चेयरमेन जिला रेड क्रॉस सोसाइटी बालोद) उपस्थित रहे। विशेष अतिथियों में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती तारिणी चंद्राकर, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा चौधरी, जनपद अध्यक्ष श्रीमती सरस्वती टेमरिया, नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री कमलेश सोनी, रेडक्रॉस जिला बालोद की वाइस चेयरमैन श्रीमती कमला वर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री रूपनारायण देशमुख मौजूद रहे।

पत्नी भी शिक्षा और समाज सेवा में निभा रहीं अहम भूमिका-लाल रघुवीर सिंह ठाकुर की पत्नी खेमलता ठाकुर पीएम श्री स्कूल जगतरा में प्रधान पाठक के रूप में पदस्थ हैं। वे लगातार समुदाय को स्कूल से जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। इसी प्रयास का परिणाम है कि पीएम श्री जगतरा में अब तक 34 बार "न्यौता भोज" का आयोजन हो चुका है। स्कूल की शिक्षण व्यवस्था और नवाचारों की सराहना कलेक्टर, डीईओ, बीईओ सहित कई अधिकारी कर चुके हैं।

समाज के लिए प्रेरणा बना परिवार-एक ओर जहां लाल रघुवीर सिंह ठाकुर रक्तदान, नेत्रदान और देहदान जैसे मानवीय कार्यों से समाज को नई दिशा दे रहे हैं, वहीं उनकी पत्नी शिक्षा और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से बच्चों के भविष्य को संवारने में जुटी हैं। विश्व रक्तदाता दिवस 18 जून के इस अवसर पर यह दंपति समाज के लिए प्रेरणा का प्रतीक बनकर सामने आया है, जो यह संदेश देता है कि सेवा और संवेदना से ही समाज को बेहतर बनाया जा सकता है।

DONOR COUCH

प्लास्टिक मुक्त बालोद के लिए समाजसेवी राजेश सिन्हा की अनोखी मुहिम

53 गांवों में बांट चुके हैं स्टील के थाली-गिलास सेट, अब तक करीब 10 लाख 60 हजार रुपये कर चुके हैं खर्च

बालोद जिला को पर्यावरण सुरक्षा हेतु एक और गांव को राजेश कुमार सिन्हा के तरफ से 200 थाली 200 गिलास प्रदान किया गया। मुंदेरा गांव वासियों द्वारा आश्वासन दिया गया कि गांव में डिस्पोजल पतरी मुक्त गांव बनाएंगे एवं स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत के मिशन कदम से कदम मिलाकर चलेंगे।

बालोद/ गुंडरदेही ✍दर्शन बालोद✍

पर्यावरण संरक्षण और प्लास्टिक मुक्त समाज की दिशा में बालोद जिले के गुण्डरदेही ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सिर्राभांठा निवासी समाजसेवी राजेश सिन्हा एक प्रेरणादायक अभियान चला रहे हैं। पिछले वर्ष से उन्होंने जिले को प्लास्टिक मुक्त बनाने की पहल शुरू की है, जिसमें अब तक उन्हें उल्लेखनीय सफलता भी मिल चुकी है। राजेश सिन्हा अपने निजी खर्च से जिले के विभिन्न गांवों, सामाजिक संगठनों एवं पंचायतों को 200 स्टील थाली और 200 स्टील गिलास का सेट निशुल्क उपलब्ध करा रहे हैं, ताकि सार्वजनिक आयोजनों में प्लास्टिक डिस्पोजल और पत्तलों का उपयोग बंद हो सके। एक गांव में यह सामग्री उपलब्ध कराने में लगभग 20 हजार रुपये का खर्च आता है। इस हिसाब से अब तक 53 गांवों में करीब 10 लाख 60 हजार रुपये वे स्वयं खर्च कर चुके हैं।

प्लास्टिक मुक्त गांव बनाने के लिए भरवाते हैं शपथ पत्र

राजेश सिन्हा केवल बर्तन दान ही नहीं करते, बल्कि जिन गांवों, संगठनों और समाज प्रमुखों को यह सामग्री दी जाती है, उनसे लिखित शपथ पत्र भी भरवाते हैं। शपथ पत्र में ग्रामीण यह संकल्प लेते हैं कि वे अपने गांव को स्वच्छ, स्वस्थ और प्लास्टिक मुक्त बनाएंगे तथा किसी भी सार्वजनिक आयोजन में डिस्पोजल प्लास्टिक और पतरी का उपयोग नहीं करेंगे। नियम का उल्लंघन करने वालों पर दंडात्मक कार्रवाई का भी उल्लेख किया जाता है।

53 गांवों तक पहुंच चुकी है मुहिम

राजेश सिन्हा ने इस अभियान की शुरुआत अपने गृह ग्राम सिर्राभांठा से की थी। इसके बाद उन्होंने लगातार गांव-गांव पहुंचकर लोगों को जागरूक किया। शुरुआत में कुछ गांवों तक सीमित यह अभियान अब बढ़कर 53 गांवों तक पहुंच चुका है। इस मुहिम के तहत ग्राम चीचा, गोरकापार, खुरसुनी, मुड़िया, ओडारसकरी, नवागांव, घीना, कलंगपुर, तिलखैरी, भिलाई, पुरूर, परसोदा, माहुद (बी), मनकी, सलौनी, मुक्त वाटिका, कुडेरा दादर, देवरी, मोहंदीपाट सहित अनेक गांवों में 200-200 नग स्टील थाली एवं गिलास भेंट किए जा चुके हैं।

2019 से रखी थी

बर्तन बैंक की नींव

समाजसेवी राजेश सिन्हा ने वर्ष 2019 में अपने गांव से ही “बर्तन बैंक” की शुरुआत की थी। गांव में होने वाले छोटे-बड़े आयोजनों में वे अपनी ओर से स्टील के बर्तन उपलब्ध कराते थे। उनकी इस पहल से प्रेरित होकर अब अन्य गांवों और संगठनों ने भी बर्तन बैंक की शुरुआत की है।

पर्यावरण संरक्षण का बन रहे प्रेरणास्रोत

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राजेश सिन्हा की यह पहल जिलेभर में चर्चा का विषय बनी हुई है। लोगों का कहना है कि यदि हर गांव और हर समाज इस तरह की छोटी-छोटी जिम्मेदारियां निभाए, तो प्लास्टिक मुक्त समाज का सपना जल्द साकार हो सकता है। राजेश सिन्हा का कहना है कि उनका उद्देश्य केवल बर्तन बांटना नहीं, बल्कि लोगों में पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के प्रति स्थायी जागरूकता पैदा करना है।

बेनू राम साहू : समाजसेवा की मिसाल, मानवता और संस्कार से गढ़ी प्रेरणादायक पहचान

सेवा को बनाया जीवन का उद्देश्य

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

जिले के ग्राम नर्रा निवासी एवं रेलवे में सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर के पद पर कार्यरत समाजसेवी बेनू राम साहू आज मानव सेवा, सामाजिक सरोकार और जनहित के कार्यों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। वर्तमान में भिलाई-3 के मानसरोवर कॉलोनी में निवासरत बेनू राम साहू लगातार ऐसे कार्य कर रहे हैं, जो समाज को सकारात्मक दिशा देने का काम कर रहे हैं। वे केवल सामाजिक संदेश देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि स्वयं मैदान में उतरकर सेवा कार्यों को लेकर अंजाम देते हैं। यही कारण है कि उनकी पहचान आज एक संवेदनशील और कर्मशील समाजसेवी के रूप में बन चुकी है। कुछ उदाहरण देखिए जो उनकी सेवा के प्रमाण है।

बेटे के जन्मदिन को बनाया जनसेवा का पर्व

बेनूराम साहू के पुत्र जयंत कुमार साहू ने अपने 18वें जन्मदिन को अनूठे अंदाज में मनाकर समाज के सामने एक नई मिसाल पेश की। तीन सालों से फिजूल खर्ची से दूर रहते हुए उन्होंने रायपुर एम्स अस्पताल के पास संचालित “ए मां भोजन समिति” के माध्यम से करीब 800 जरूरतमंद लोगों को निशुल्क भोजन कराया। ऐसा ही सेवा कार्य पिछले चार वर्षों से बेटी हर्षिता साहू के जन्मदिन पर भी करते आ रहे हैं। भिलाई में पूजा-अर्चना और गौ सेवा से शुरुआत कर जयंत स्वयं परिवार के साथ भोजन परोसते नजर आए। लोगों ने उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए खूब आशीर्वाद दिया। जयंत ने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि दिखावे और अनावश्यक खर्च के बजाय जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।

माता की स्मृति में स्कूलों में कराया नेवता भोज

अपनी माता स्वर्गीय सुरुज बाई साहू की पुण्य स्मृति में बेनूराम साहू ने धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित न रहकर बच्चों के बीच सेवा का मार्ग चुना। उन्होंने ग्राम नर्रा और धरमपुरा के शासकीय स्कूलों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों के लिए नेवता भोज का आयोजन कराया। इस दौरान सैकड़ों बच्चों को ससम्मान भोजन कराया गया। कार्यक्रम में अनेक सामाजिक पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीणजन शामिल हुए। बेनूराम साहू ने कहा कि उनकी माता सदैव सेवा और संस्कार में विश्वास रखती थीं और बच्चों को भोजन कराना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देने जैसा लगा।

रक्षाबंधन पर गौ माता को रेडियम का रक्षासूत्र

भाई बहन के पवित्र त्यौहार पर सामान्यतः बहन अपने भाई के कलाई में राखी बांधकर मनाई जाती हैं। वही साहू परिवार ने इस पावन अवसर पर सड़क पर घूमने वाले लगभग 200

स्वर्गधाम निवासी माता-पिता के पुण्य स्मृति में
निःशुल्क
कर्मा प्याऊ
रेलनगर चौक, बरोदा एवं सिरसा गेट चौक, भिलाई-3
जल ही जीवन है
मानव सेवा ही माधव सेवा है

गौमाता और नंदी महाराज को रेडियम बेल्ट का रक्षासूत्र बांधकर त्योहार मनाया ताकि किसी प्रकार के रात्रि में चार पहिया या दुपहिया वाहन से दुर्घटना ना हो।

भीषण गर्मी में 'कर्मा प्याऊ' से बुझा रहे प्यास

गर्मी के मौसम में भिलाई-3 के सिरसा गेट चौक पर संचालित निःशुल्क 'कर्मा प्याऊ' आज हजारों राहगीरों के लिए राहत का केंद्र बन चुका है। स्वर्गीय माता-पिता की स्मृति में शुरू की गई इस सेवा के तहत बेनूराम साहू अपनी पत्नी भारती देवी साहू के साथ स्वयं खड़े होकर लोगों को ठंडा और मीठा पानी पिलाते हैं। पिछले छः सालों से यह सेवा गर्मी से लेकर मानसून तक लगातार संचालित होती है। यहां मजदूर, बस यात्री, रिक्शा चालक और राहगीर रुककर पानी पीते हैं और इस पहल की सराहना करते हैं।

अक्ती और मातृ दिवस पर भी किया विशेष सेवा कार्य

अक्षय तृतीया के अवसर पर स्वर्गीय सुरुज बाई साहू की स्मृति में हजारों लोगों को शरबत और ठंडा पानी वितरित किया गया। पूरे परिवार ने मिलकर सेवा कार्य में योगदान दिया। वहीं मातृ दिवस पर भी कर्मा प्याऊ में विशेष आयोजन कर राहगीरों को आमपना और जलजीरा पिलाया गया। दोपहर से शाम तक चले । इस सेवा कार्य में हजारों लोगों को गर्मी से राहत मिली।

संघर्षों से निकले, सेवा को बनाया पहचान

ग्रामीणों के अनुसार बेनू राम साहू का परिवार बेहद साधारण और संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से आगे बढ़ा है। उनके पिता मंगतू राम साहू ने परिवार के पालन-पोषण के लिए काफी कठिनाइयों का सामना किया। उन्हीं संघर्षों और संस्कारों से प्रेरणा लेकर आज बेनूराम साहू जरूरतमंदों की सेवा को अपना धर्म मानते हैं। वे कहते हैं कि अच्छे कर्म करने के लिए केवल पैसा नहीं, बल्कि सेवा भाव जरूरी होता है।

समाजसेवा के कई कार्यों में सक्रिय भूमिका

बेनूराम साहू रायपुर एम्स अस्पताल में संचालित "ए मां भोजन सेवा समिति" के माध्यम से जरूरतमंद मरीजों के लिए भोजन सेवा में भी सक्रिय योगदान देते हैं। इसके अलावा गौमाता और अन्य बेजुबान जानवरों के लिए भी उन्होंने कई स्थानों पर पानी की व्यवस्था कराई है।

उनकी प्रेरणा से कई लोगों ने अपने क्षेत्रों में बर्तन बैंक, जल सेवा और अन्य सामाजिक कार्यों की शुरुआत की है।

समाज के लिए प्रेरणादायक संदेश

आज जब समाज का बड़ा वर्ग निजी जीवन और दिखावे में व्यस्त है, ऐसे समय में बेनूराम साहू जैसे लोग यह साबित कर रहे हैं कि छोटे-छोटे सेवा कार्य भी समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

उनकी पहल यह संदेश देती है कि — "मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और जरूर-

निःशुल्क
कर्मा प्याऊ
जल ही जीवन
सेवा ही माधव
बेनूराम साहू

महाराणा प्रताप जयंती पर महिलाओं ने पेश की सेवा और संस्कार की मिसाल, राहगीरों को बांटा शरबत

अखिल क्षत्रिय महिला वीरांगना समाज का अनूठा आयोजन, भीषण गर्मी में मानव सेवा का दिया संदेश

भिलाई ✍दर्शन बालोद✍

महाराणा प्रताप जयंती के पावन अवसर पर जहां पूरे प्रदेश में वीरता और स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप को याद किया गया, वहीं भिलाई में महिलाओं ने सामाजिक सरोकार और सेवा भावना की मिसाल पेश की। अखिल क्षत्रिय महिला वीरांगना समाज भिलाई द्वारा रिसाली स्थित डीपीएस चौक में शरबत वितरण कार्यक्रम आयोजित कर राहगीरों को राहत पहुंचाई गई। भीषण गर्मी के बीच समाज की महिलाओं ने पूरे उत्साह और सेवा भाव के साथ राहगीरों को शीतल शरबत वितरित किया। इस दौरान वहां से गुजरने वाले लोगों ने महिलाओं के इस सामाजिक प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम का उद्देश्य केवल प्यास बुझाना नहीं, बल्कि समाज में सेवा, सहयोग और मानवीय संवेदनाओं को मजबूत करना भी रहा।

महाराणा प्रताप के आदर्शों को किया याद

कार्यक्रम के दौरान महाराणा प्रताप की वीरता, राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान से जुड़े प्रेरक प्रसंगों का उल्लेख किया गया। महिलाओं द्वारा कविता पाठ और शौर्य गाथाओं की प्रस्तुति भी दी गई, जिससे कार्यक्रम में सांस्कृतिक और प्रेरणादायी माहौल देखने को मिला। समाज की जिलाध्यक्ष ललिता सिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन संघर्ष, साहस और राष्ट्र गौरव की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि समाज हर वर्ष उनकी जयंती पर सेवा और जनहित से जुड़े कार्यक्रम आयोजित कर युवाओं और महिलाओं को सकारात्मक संदेश देने का प्रयास करता है।

“सेवा ही सबसे बड़ा संस्कार”

ललिता सिंह ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन महिलाओं की सामाजिक सहभागिता को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि महिला शक्ति केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज निर्माण और जनसेवा में भी अहम भूमिका निभा रही है। उन्होंने इसे महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता का प्रतीक बताया।

प्रदेश उपाध्यक्ष किरण सिंह रहीं विशेष रूप से मौजूद

कार्यक्रम में अखिल भारतीय क्षत्रिय महिला वीरांगना समाज की प्रदेश उपाध्यक्ष किरण सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उनके मार्गदर्शन में समाज द्वारा लगातार सामाजिक, सांस्कृतिक और सेवा गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। उन्होंने महिलाओं को समाजसेवा और सामाजिक जागरूकता के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

इन महिलाओं ने निभाई सक्रिय भूमिका

कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रदेश उपाध्यक्ष किरण सिंह, जिलाध्यक्ष ललिता सिंह सहित कुसुम सिंह, संध्या सिंह, प्राची सिंह, सुषमा सिंह, संजय सिंह, संगीता सिंह, अनीता सिंह, डॉ. प्रभा सिंह, अनीमा सिंह, सुनीता सिंह और गीता सिंह सहित समाज के अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

सेवा, संस्कार और सामाजिक एकता का संदेश

रिसाली में आयोजित यह आयोजन केवल शरबत वितरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज में सेवा भावना, महिला नेतृत्व और सामाजिक एकता का सकारात्मक संदेश देने वाला प्रेरणादायी कार्यक्रम बन गया।